चन्दामामा
सितम्बर १९७६
1 Re

लूटो जेम्स का मज़ा
जीतने के लिए ५०० मजेदार पुरस्कार!
इसके अलावा भी अन्य शानदार पुरस्कार
जीतने का सुअवसर!
क्या बता सकते हो कि इनमें कौन सा चित्र असमान है?
1
2
3
4
5
Cadbury's
MILK CHOCOLATE
GEMS
जल्दी करो!
अपना उत्तर, कैडबरिज जेम्स के एक खाली प्लास्टिक पैकेट के साथ भेजो। पहले ५०० सफल प्रतियोगियों को ११ रुपये मूल्य का स्टेट बैंक गिफ्ट चेक मिलेगा। अतः तुम्हें अपने गिफ्ट चेक पर ४०० रुपये का एक और शानदार इनाम जीतने का मौका मिलेगा— भाग्यशाली लोगों के लिए अतिरिक्त लाभ!
अपना उत्तर, नाम और पते के साथ केवल अंग्रेजी में और बड़े (ब्लॉक) अक्षरों में लिखो।
प्रवेश-पत्र इस पते पर भेजो:
"लूटो जेम्स का मजा" डिपार्टमेंट D-20
पोस्ट बॉक्स नं. ४६, थाने ४०० ६०१
प्रवेश-पत्र पहुंचने की अंतिम तिथि:
१६ अक्तूबर १९७६
चॉकलेट से भरे रंगीन कैडबरिज़ जेम्स
CHAITRA-C-39 HN

राजू का राज़

अरे, राजू इस बार फिर प्रथम आया! मगर कैसे? गुरुजी हमेशा उसका पक्ष लेते हैं...श शा...आओ साथियों जरा उसके डेस्क की तलाशी तो लें.

हूँ—! जरा इसकी रेखा गणित की कापी तो देखो! ड्रॉइंग कितनी साफ और कितनी सही हैं!

और यह विज्ञान की कापी...कितने सुन्दर डायाग्राम हैं! गुरुजी ने भी लिखा है, "श्रेष्ठ!" "शाबाश।" अरे जल्दी से रख दो, राजू आ रहा है.

क्या कुछ ढूंढ़ रहे हो भाइयों? हाँ राजू. हम तुम्हारा राज ढूंढ़ रहे हैं. क्या कारण है कि तुम्हारा काम हमेशा इतना साफ-सुथरा रहता है?

अत्यंत मामूली बात है दोस्तो. इसका राज है मेरा कैमल इंस्ट्रूमेंट्स बॉक्स! एकदम सही! अब तक मैंने जो बॉक्स प्रयोग किये उनमें सर्वोत्तम है यह.

अच्छा, माताजी से कहकर एक बॉक्स तुरंत मंगाना चाहिए! मुझे भी!

राजू के राज को अपना राज बना लीजिये, कैमल इंस्ट्रूमेंट्स बॉक्स लाइये.

कैम्लिन प्राईवेट लिमिटेड
आर्ट मटेरिअल डिविजन
बम्बई ४०० ०५९.

कैमलिन जपादन के साथ बड़ी सीरीज में आकर्षक रिटर्न!

कैमल वाटर कलर पेंटिंग, क्राइलिन कलर पेंटिंग और कार्टूनिंग के पत्र-व्यवहारिक कोर्सों में शामिल हो जाइये। उपर के पते पर सम्पर्क साधिए।
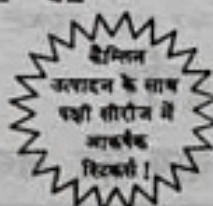
Vision 768 Hin.

ज्ञानवर्द्धन तथा मनोरंजन के लिए...

ज्ञान भारती बाल पॉकेट बुक्स

नई साज-सज्जा सहित पुस्तकें!

प्रधान मंत्री के २० सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत ज्ञानभारती बाल पॉकेट बुक्स अब ~~१.१०~~ की जगह १/- रु. में

प्रत्येक का मूल्य **१/-** रुपये

- तेनालीराम के लतीफे
- जंगल का आदमी
- पुतली कथा
- सम्राट की कहानी
- गधा चला गंधर्व नगर को
- चांद जादी
- एक था राजा
- कोड़े की करामात
- दैत्य की बेटी
- गप्पें
- पाताल लोक की यात्रा
- व्यास जी ने कहा था

- बलिशतिए की घंटी
- हवा में डाका
- विचित्र सरदार
- एक था कलाकार
- रानी और भेड़िया

सदस्यता के नियम :

- दो रुपये मनीआर्डर द्वारा सदस्यता शुल्क भेजिए आपका रुपया कार्यालय में प्राप्त होने पर योजना का सदस्य बना लिया जावेगा और आपको सदस्य संख्या तथा सदस्यता-प्रमाण-पत्र भेज दिया जावेगा।

मासिक पत्रिका **ज्ञान भारती** मुफ्त मंगाने के लिये पत्र लिखें

लगभग ८०० पृष्ठ का बाल साहित्य केवल ५/- रु. प्रति

- सम्पूर्ण बाल महाभारत
- " मायादेश का रहस्य
- " हाजी बाबा

दफ़्ती की पक्की जिल्द में मज़बूत बनी हुई संग्रहणीय पुस्तकें!

विवरण के लिए अपना पता स्पष्ट लिखकर भेजें।

ज्ञान भारती,

च, विशेश्वर नाथ रोड, लखनऊ (उ०प्र०)

KRISHNA

जन्म :
५-८-१९०८

मृत्यु :
२४-९-१९७५

श्री चक्रपाणि

हमारे संस्थापक तथा मार्गदर्शक श्री चक्रपाणि एक वर्ष पूर्व हमें छोड़कर चले गये । हम सदा उनकी मेधाशक्ति का स्मरण करते हुए पत्रिका के संचालन में उनके पद-चिह्नों पर चलते हुए उनके आशय की सिद्धि के हेतु निरंतर प्रयत्नशील हैं । यद्यपि वे हमारे बीच भौतिक दृष्टि से नहीं हैं, फिर भी आत्मा के रूप में वे सदा हमें आशीर्वाद दे रहे हैं । उनकी प्रथम वर्द्धंति के संदर्भ में उन महानुभाव के प्रति हम हृदयपूर्वक अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं ।

—"चन्दामामा"

चन्दामामा
संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी
इस महीने की बेताल कथा "दण्ड का अधिकार" यह बताती है कि शासन की जिम्मेदारी वहन करनेवाले को अपराधों का दण्ड निर्धारित करने का हक़ भी होता है। जनता को चाहिए कि उस हक़ को स्वीकार कर उसका आदर करे। लेकिन शासक भी उन नियमों के अतीत नहीं हैं। दण्ड विधि का उन्हें उल्लंघन नहीं करना चाहिए। ऐसा करने पर एक साधारण नागरिक को भी उन्हें दण्ड देने का हक़ प्राप्त हो जाता है।
वर्ष : २९ सितंबर १९७६ अंक : १
CHANDAMAMA PUBLICATION
CHITRA

मित्र-संप्राप्ति

[३८]

सियार की कहानी सुनकर ब्राह्मणी ने अपने पति से कहा–"अच्छी बात है! घर में भुने हुए तिल हैं। सवेरे ही जंगल में जाकर लकड़ी और दाभ ले आइये। रसोई बनाकर तिल के साथ तीनों ब्राह्मणों को खाना परोसूंगी।"

दूसरे दिन प्रात:काल ब्राह्मण जंगल में चला गया। उसकी पत्नी ने तिल कूटकर भूसा निकाला, खीर बनाने के ख्याल से सुखाया। वह रसोई में खाना बनाने की तैयारी कर रही थी, इधर एक कुत्ते ने आकर तिल को गंदा बनाया।

इसे देख ब्राह्मणी ने सोचा–'आज मैं ब्राह्मणों को क्या खिलाऊंगी? घर में सारी चीजें एक दम समाप्त हो गई हैं। अब तो मेरे सामने एक ही उपाय है, भूसा निकाले गये इन तिलों को देकर कच्चे तिल किसी से लेना होगा। इसके बाद ही रसोई बनानी होगी।'

यह सोचकर ब्राह्मणी ने पड़ोस में जाकर उस गृहिणी से पूछा–"बहन! आप भूसा निकाले गये इन तिलों को लेकर इसके बराबर कच्चा तिल देंगी?"

पड़ोसिन ने सोचा कि यह तो फ़ायदे का सौदा है, फिर बड़ी खुशी के साथ उसने छिलका निकाले गये तिल ले लिये और ब्राह्मणी को कच्चा तिल दे दिया। ब्राह्मणी के चले जाने पर उस गृहिणी ने अपने पुत्र कामंदकी को अपने निकट बुलाया और अपने फ़ायदे के सौदे का परिचय देकर कहा–"मैंने बहुत ही अक़्लमंदी का काम किया है न बेटा?"

कामंदकी ने अपनी माँ से कहा–"माँ! इस बदलाव को देखने से मेरे मन में कोई

संदेह पैदा हो रहा है। किसी खास कारण के बिना कोई भी इस प्रकार का नुक़सान नहीं उठाते! लेकिन यह बताओ, वह औरत कौन थी?"

माँ ने उस ब्राह्मणी का परिचय दिया।

"ओह! वह तो बड़ी चतुर औरत है। माँ, तुम उस तिल को बाहर फेंक दो। अगर तिल किसी काम के होते तो वह तुम्हें कभी न देती।" कामंदकी ने समझाया।

माँ ने कामंदकी की बात मानकर ऐसा ही किया।

यह कहानी सुनाकर बृहस्पति ने चूडाकर्ण के यहाँ से एक फावड़ा माँगकर लिया और मेरे सुरंग को खोदने लगा। (यों चूहा कहानी सुनाता गया।)

मुझे तो बड़ा डर लगा। क्योंकि मेरे सुरंग में मैंने बहुत-सा सोना और खाना छिपाकर रखा था। मुझे डर था कि वे लोग हड़प ले जायेंगे, लेकिन मैंने उन्हें नहीं रोका, क्योंकि रोकने से मेरे प्राणों के लिए खतरा था।

दोनों ने मेरी सारी सामग्री हड़प ली। सारा सोना बराबर बांटकर वे परमानंदित हो बैठ गये। इस प्रकार मेरा घर नष्ट हो गया, मेरी संपत्ति छीन ली गई। अब मैं लाचार की हालत में एक दूसरे स्थान पर जाने के लिए अपने अनुचरों के साथ चल पड़ा।

बेचारे मेरे अनुचर बहुत ही भूखे थे। उन लोगों ने सोचा कि चूडाकर्ण के पात्र से आहार चुराया जा सकता है। फिर क्या था, हम वापस लौट गये। हमारी आहट पाकर चूड़ाकर्ण ने भिक्षापात्र पर लाठी चलाई।

"तुम लाठी क्यों चलाते हो?" बृहस्पति ने पूछा।

"वह कमबख्त चूहा फिर से मेरा आहार चुराने के लिए आ गया है।" चूड़ाकर्ण ने उत्तर दिया।

"तुम डरते क्यों हो? उसका घर और संपत्ति सब चला गया। अब वह मृत

चूहे के बराबर है। वह तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकता।" बृहस्पति ने समझाया।

यह बात सुनकर में गुस्से में आ गया और भिक्षा पात्र में कूद पड़ा। मगर मैं उस पात्र को पकड़ न पाया, मेरे पैर फिसल गये और धम्म से नीचे गिर पड़ा। बृहस्पति ने मुझ पर बाँस का प्रहार किया। परंतु भाग्य पर विश्वास करनेवाले की कहानी की भाँति मैं उस प्रहार से बच गया।

"वह कैसी कहानी है?" मंधरक ने पूछा।

हिरण्यक ने यों सुनाया :

भाग्य पर विश्वास

उज्जयिनी नगर में सागरदत्त नामक एक व्यापारी था। एक दिन उसका पुत्र सौ रुपये देकर एक पुस्तक खरीद लाया। उस पुस्तक को देख सागरदत्त ने अपने पुत्र से पूछा—"तुमने कितने में यह पुस्तक खरीदी?"

"सौ रुपयों में।" पुत्र ने उत्तर दिया।

"मूर्ख! श्लोक के एक चरणवाली पुस्तक को तुमने सौ रुपये में खरीदा? ऐसे गोबर गणेश तुम धन कैसे कमा सकोगे? मेरे घर से तुरंत निकल जाओ!" इन शब्दों के साथ क्रोध में आकर सागरदत्त ने निर्दयता पूर्वक अपने पुत्र को घर से निकाल दिया।

अपने पिता की इस करनी पर पुत्र बड़ा दुखी हुआ। बड़ी दूर की यात्रा करके आखिर वह कौशांबी नगर में पहुँचा और वहीं रहने लगा। थोड़े दिन बीत गये। वहाँ के लोग उसका परिचय पूछने लगे—"तुम्हारा नाम क्या है? तुम कहाँ से आये हो?"

इन सवालों का उत्तर वह बराबर यही देता रहा—"भाग्य का निर्णय अनिवार्य है।"

इसलिए कौशांबी के सभी निवासी उसे "भाग्य का निर्णय" पुकारने लगे।

(और है)

माया सरोवर

[८]

[ग्रामवासियों पर हाथी को उकसानेवाले मगर-मच्छ की आकृतिवाले को वैद्य चरकाचारी तथा वीरनारायण को दिखाकर मुखिये ने शांत किया। वीरनारायण मगर-मच्छ की आकृतिवाले की बगल में से टूटी तलवार को निकालने जा रहा था, तभी दूर से चरकाचारी का आर्तनाद तथा हाथियों का चींकार सुनाई दिया। बाद–]

मगर-मच्छ की आकृतिवाले ने भाँप लिया कि जंगली हाथी उन पर आक्रमण करने जा रहे हैं। छोटे-बड़े मिलकर कुल वे छे हाथी थे। उसने सोचा कि उन हाथियों ने कभी उसके वाहन जलग्रह जैसे हाथी को देखा न होगा। उसका बल और अपने हाथ के त्रिशूल की ताक़त का पता लगते ही उन हाथियों में जो बचे रहेंगे, वे जंगल में भाग जायेंगे।

यों सोचते हुए मगर-मच्छ की आकृतिवाले ने अपनी सवारी को ललकारा– "हे जलग्रह! तुम आगे बढ़कर आनेवाले उस हाथी को अपने जबड़ों का शिकार बना दो।"

मगर-मच्छ की आकृतिवाले की चेतावनी के पाते ही जलग्रह उछल पड़ा और अपने तेज दाँतों से समीप के एक हाथी के सर पर प्रहार किया। चोट खाकर जंगली

हाथी चींकार करते लुढ़क पड़ा। उसी समय मगर-मच्छ की आकृतिवाले ने एक और हाथी के कुंभस्थल पर अपने त्रिशूल का प्रहार किया। वह भी चोट खाकर सर नीचे की ओर झुकाये लुढ़क पड़ा। जलग्रह उसे अपने पैरों से रौंदते आगे बढ़ा और तीसरे हाथी के सर को अपनी सूंड से कसकर दांतों से इस तरह धक्का दिया कि वह भी दूर जा गिरा।

इस प्रकार कुछ ही क्षणों में तीन जंगली हाथी घायल होकर जमीन पर गिर पड़े, बाक़ी हाथी उस दृश्य को देख घबरा कर भागने को हुए, तब मगर-मच्छ की आकृतिवाले ने अपने शूल का उन पर भी बुरी तरह से प्रहार किया। पीड़ा के मारे वे हाथी चींकार करते जंगल की ओर बेतहाशा भाग गये। मगर-मच्छ की आकृतिवाले ने थोड़ी दूर तक उनका पीछा किया, जब वह बुरी तरह से थक गया, तब वह अपने वाहन के साथ रुक गया। उसे अचानक अपनी चिकित्सा करने आये हुए वीरनारायण की याद हो आई। जंगली हाथियों के साथ उसकी जो लड़ाई हुई, उस भगदड़ में कहीं वह नीचे गिरकर कुचल तो नहीं गया?

जब उसके मन में यह संदेह पैदा हुआ तब उसका दिल कांप उठा। उसने चारों ओर एक बार नज़र दौड़ा कर उच्च स्वर में पुकारा—"अरे वीरनारायण! बोलो, तुम कहाँ हो?"

इसके दूसरे ही क्षण मगर-मच्छ की आकृतिवाले के पीछे से यह आवाज़ सुनाई दी—"मगर-मच्छ साहब! मैं यहीं पर हूँ। अब तक मैं आप की पूंछ पकड़कर लटकता रहा। कृपया यह बताइये कि हम जीत गये या जंगली हाथी?"

वह आवाज़ वीर नारायण की थी। जिस वक़्त जंगली हाथियों ने जलग्रह पर हमला किया, तब वह नीचे उतरकर भाग जाना चाहता था, मगर फिर उसके मन में

यह शंका पैदा हुई कि ऐसा करने से वह हाथियों के नीचे गिर कर दब सकता है। यह सोचकर उसने मगर-मच्छ की आकृतिवाले की खोल की पूंछ पकड़कर आँखें मूंद लीं। इसके बाद क्या हुआ, उसे ठीक से स्मरण नहीं है, क्योंकि वह बहुत ही डर गया था।

वीरनारायण का उत्तर सुनकर मगर-मच्छवाला थोड़ा आश्वस्त हुआ और बोला–"ओह! तुम यहीं पर जलग्रह पर चिपके हुए हो! हम लोग बच ही नहीं गये, बल्कि विजयी हो गये हैं। तुम डरो मत। मेरी बगल में धंसी तलवार को तुम कब निकालोगे?"

"मगर-मच्छ साहब! जल्दबाजी न कीजिएगा! जंगली हाथियों की लड़ाई में शायद आप असली बात भूल गये मालूम होते हैं। चरकाचारी ने यहीं-कहीं से एक-दो बार चीखकर हमें पुकारा था। वह किन्हीं जड़ी-बूटी और औषधियों की खोज में इसी ओर गया हुआ है। पहले हमें उसे ढूंढ़ना होगा।" वीरनारायण ने जवाब दिया।

ये बातें सुन मगर-मच्छ की आकृतिवाला सहम गया और बोला–"हाँ, हाँ! तुम ठीक कहते हो! चरकाचारी ने दो-तीन दफ़े उसे बचाने को पुकार लगाई थी। इसके

बाद वह चुप हो गया है। अगर किसी शेर या बाघ ने उस पर हमला करके उसे मार डाला हो तो क्या मेरी बगल में यह तलवार यों ही हमेशा के लिए धंसी रह जाएगी? इस तलवार को बाहर निकाल कर मेरे घाव का तुम इलाज नहीं कर सकते हो?"

ये बातें सुन वीरनारायण ठहाके मारकर हँस पड़ा और बोला–"क्या आप यह समझते हैं कि शस्त्र चिकित्सा करने की जानकारी रखनेवाला मैं घावों को भरने की दवा की जानकारी नहीं रखता? मेरी तथा चरकाचारी की जीविका में कोई होड़ न हो, इस ख्याल से हम अपने गाँव में

वीरनारायण डरते-सहमते मगर-मच्छ की आकृतिवाले के सामने आ खड़ा हुआ। अब उसके मन में यह संदेद पैदा होने लगा कि मगर-मच्छ साहब जिस हाथी पर बैठा है, वह कोई विचित्र पिशाच होगा! ऐसा न हो, तो एक साथ एक ही हाथी पाँच-छे जंगली हाथियों को कैसे भगा सकता है?

"अरे वीरनारायण! चकित होकर देखते क्या हो? इस तलवार को शीघ्र निकाल कर मेरे घाव का इलाज करो। देरी मत करो।" मगर-मच्छ की आकृतिवाले ने कड़क कर कहा।

छोटा-सा स्वांग रच रहे थे कि एक व्यक्ति जिस प्रकार के इलाज की जानकारी रखता है, वह दूसरा नहीं रखता। ऐसा न करने पर मेरे गाँववाले हम दोनों में से किसी एक ही को गाँव में बसने देंगे और उसकी जीविका का प्रबंध कर दूसरे को गाँव से भगा देंगे।"

यह उत्तर सुनकर मगर-मच्छ की आकृतिवाला ज़ोर से हँसने को हुआ, परंतु बगल में धंसी तलवार साँस के फूलने से चुभ गई जिससे वह कराह उठा और गुस्से में आकर बोला–"अरे धूर्त! तुम मेरी पूंछ को छोड़कर जल्दी मेरे सामने आ जाओ।"

"मगर-मच्छ साहब! इसके इलाज के लिए आवश्यक जड़ी-बूड़ी और औषधियाँ लाने के लिए ही तो चरकाचारी जंगल में गया हुआ है। मैं भी अगर उन जड़ी-बूड़ीयों के प्राप्त किये बिना तलवार निकाल दूं तो आप के प्राणों के लिए खतरा पैदा हो सकता है। इसीलिए मैं संकोच कर रहा हूँ। वरना कभी का निकाल देता।" वीरनारायण ने कहा।

"मेरे प्राण निकल जाने योग्य खतरा पैदा हो गया तो तुम्हें भी मेरे साथ दूसरी दुनिया की यात्रा करनी पड़ेगी। समझे! चलो, देखें, वह चरकाचारी कहाँ पर है! किसी बाघ या शेर ने उसे पकड़ कर अपनी

भूख मिटा ली हो, तो कम से कम हमें उस वैद्य चरकाचारी की हड्डियाँ तो दिखाई देंगी!" मगर-मच्छ साहब ने व्यंग्य कसा।

इसके बाद वह जलग्रह को हाँककर घने जंगल की ओर चल पड़ा। चरकाचारी ने उन्हीं वृक्षों की आड़ में से पुकार लगाई थी।

चरकाचारी ने प्राण गंवाये न थे, पर वह बोलने की स्थिति में न था। वह थोड़ी देर पहले उन पेड़ों के नीचे जड़ी-बूटियों की खोज कर रहा था, अचानक उसे एक जगह उसके लिए आवश्यक जड़ी-बूटियाँ मिल गईं। वह झुककर उन पौधों को उखाड़ने जा रहा था, तभी एक दुर्घटना हो गई।

वह जिस पेड़ के नीचे उन पौधों को उखाड़ रहा था, उस पेड़ की एक डाल से अजगर लिपटा पड़ा था। दो दिनों से उसे कोई शिकार हाथ न लगा था। वह अपने आहार की ताक में व्यग्र था, तभी चरकाचारी को देख वह धम्म से उसके ऊपर गिर पड़ा।

अजगर अचानक जब चरकाचारी के ऊपर गिर पड़ा, तब उसने सोचा कि कोई डाल टूटकर उसके ऊपर गिर गई है, वह अपनी जान बचाने के लिए दूर भागने को हुआ। मगर उसके हाथ-पैरों ने जवाब दे दिये। वह भयकंपित हो चकित खड़ा था, तभी उसके शरीर को अपनी लपेट में लेते हुए एक भयंकर अजगर

उसे दिखाई दिया। तत्काल वह चिल्ला उठा था-"बचाइये! बचाइये!"

चरकाचारी की पुकार को ज्वार के खेतों के पास स्थित मगर-मच्छ की आकृतिवाले के साथ गाँववालों ने भी सुना। उसी ओर बढ़नेवाले जयशील तथा सिद्ध साधक के कानों में भी वह चिल्लाहट पड़ी। वे दोनों झाड़ी में प्राप्त ताड़-पत्र-ग्रंथ को लेकर उसे वहाँ पर फेंकनेवाले की खोज कर रहे थे।

जयशील तथा सिद्ध साधक ने चरकाचारी की चिल्लाहट तो सुनी, मगर वह उन्हें दिखाई न दिया। दोनों उस ध्वनि की दिशा में थोड़ी दूर आगे बढ़े, तभी उन दोनों ने देखा, जंगली हाथी चिंघाड़ रहे हैं और उनके साथ मगर-मच्छ की आकृतिवाला अपने हाथ में एक त्रिशूल लेकर एक विचित्र हाथी पर सवार हो आक्रमण कर रहा है।

सिद्ध साधक आवेश में आ गया, अपने हाथ के दण्ड को ऊपर उठाकर बोला-"हमारे राजा कनकाक्ष के पुत्र और पुत्री का अपहरण करनेवाला दुष्ट व्यक्ति यही है। जैसे मैंने पहले ही बताया, यह कोई यक्ष, गंधर्व अथवा किन्नर जाति का होगा।"

"तुम जिन जातियों का व्यक्ति इसे बताते हो, वह चाहे हो या न हो, पर वह हम जैसा मानव नहीं है! वह जिस हाथी पर सवार है, उसे अच्छी तरह से देख लो। हमने ऐसे हाथी को कभी सपने में भी न देखा होगा।" जयशील ने जोश में आकर कहा।

इस बीच चरकाचारी की आवाज़ फिर एक बार सुनाई दी। जयशील ने झट से म्यान से तलवार खींचकर कहा-"तुम डरो मत! हम तुम्हारी रक्षा करने आ रहे हैं।" इन शब्दों के साथ ध्वनि की दिशा में आगे बढ़ा।

सिद्ध साधक ने विस्मय में आकर कहा-"जयशील! यह तुम क्या करते हो?

युवरानी तथा युवराजा का अपहरण करनेवाला दुष्ट जब हमारी आँखों के सामने है, उसे छोड़ कोई जंगली व्यक्ति किसी खूँख्वार जानवर का शिकार होता हो, उसे बचाने जा रहे हो?"

"हाँ, भाई! यदि हम तत्काल इसकी सहायता न करेंगे तो बेचारा यह अपनी जान से हाथ धो बैठेगा! मैं नहीं समझता कि युवराजा और युवरानी इस वक़्त खतरे में होंगे।" इन शब्दों के साथ जयशील दौड़ने लगा। सिद्ध साधक ने भी उसके पीछे भागना शुरू किया।

दोनों जब चरकाचारी के निकट पहुँचे, तब तक अजगर उसके शरीर को अपनी लपेट में ले चुका था और वह अपने जबड़ों से चरकाचारी के सर को दबोच रहा था। चरकाचारी पेड़ से सटकर खड़ा हुआ था। उसकी उंगलियाँ हिल रही थीं जिससे लगता था कि वह अभी तक जीवित है।

जयशील ने उछलकर तलवार से अजगर के सिर को चरकाचारी के सर से दूर हटाने का प्रयत्न किया, उसे डर लगा कि कहीं उसकी तलवार का वार अजगर में से निकलकर चरकाचारी पर आघात न कर बैठे। वह जबरदस्त अजगर शायद बुरी तरह से भूखा था, उसने अपने सिर से जयशील की तलवार को हटा दिया।

"जयशील! यह कोई जंगली नहीं, पढ़ा-लिखा कोई पंडित मालूम होता है। तुम जल्दी अजगर को मार डालो।" सिद्ध साधक ने चरकाचारी की ओर ध्यान से देखते हुए कहा।

जयशील ने अजगर के सिर को बायें हाथ से थामकर उसे पीछे की ओर खींचा, और उसके सिर के पिछले भाग पर तलवार का वार किया। अजगर का आधा सर कट गया। वह चटपटाने लगा। चरकाचारी के शरीर पर से उसकी पकड़ ढीली हो गयी और वह नीचे गिर पड़ा।

अजगर के साथ चरकाचारी भी नीचे गिरने को हुआ, इस पर जयशील ने उसे थामकर कहा–"सिद्ध साधक! तुम जल्दी जाकर पानी लेते आओ। यह व्यक्ति बेहोश होता जा रहा है, पर ज़िंदा है।"

सिद्ध साधक दौड़कर निकट के तालाब के पास पहुँचा और अपने कमण्डलु में पानी भर लाया। जयशील ने चरकाचारी के मुँह पर पानी छिड़क दिया, इस पर उसने आँखें खोलकर कराहते हुए कहा–"मैं कहाँ हूँ? क्या मैं ज़िंदा हूँ? या अजगर के पेट में हूँ?"

"तुम ज़िंदा हो! पहले यह मंत्र-जल पी लो। तुम ठीक हो जाओगे।" सिद्ध साधक ने इन शब्दों के साथ चरकाचारी को पानी पिलाया।

तब तक चरकाचारी की पूरी बेहोशी दूर न हुई थी, उसने पूर्ण रूप से आँखें खोलकर चारों तरफ़ नजर दौड़ाई और पूछा–"आप लोग कौन हैं? मगर-मच्छ साहब कहाँ? वीरनारायण कहाँ पर है?"

ये बातें सुनने पर जयशील ने भाँप लिया कि चरकाचारी किसका दरियाफ़्त कर रहा है। उसने सिद्ध साधक से कहा–"तुम इसकी बातें सुन रहे हो न? उस विचित्र हाथी पर बैठे मगर-मच्छ की आकृतिवाले के साथ इसकी कोई दोस्ती है!" फिर उसने चरकाचारी से पूछा–"तुम्हारा क्या नाम है? उस मगर-मच्छ की आकृतिवाले के तुम नौकर हो? या दोस्त?"

चरकाचारी जवाब देने जा रहा था, तभी मगर-मच्छ की आकृतिवाले ने पेड़ों की ओट में से आगे बढ़कर कहा–"ये चरकाचारीजी मेरे निजी वैद्य हैं, पर आप लोग कौन हैं? सच-सच नहीं बताया तो मेरे जलग्रह के द्वारा आप लोगों को कुचलवा दूंगा।"

इस पर जयशील व सिद्ध साधक उठ खड़े हुए। जयशील ने तलवार की मूठ पर हाथ रखा, सिद्ध साधक ने अपना दण्ड ऊपर उठाया। (और है)

दण्ड का अधिकार

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया। पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भाँति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजन, यह जो कठिन कार्य अपने सिर पर लिया है, इसे किसी विश्वासपात्र सेवक को सौंप नहीं दिया, इसलिए तुम्हारे इस विवेक की मैं प्रशंसा करता हूँ। क्योंकि पूर्ण विश्वासपात्र नौकर भी मौक़ा मिलने पर राजद्रोही के रूप में बदल सकता है! इसके उदाहरण स्वरूप में तुम्हें विष्णुगुप्त की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनो।"

बेताल यों सुनाने लगा: प्राचीन काल में गुणसिंह नामक राजा शासन करता था। उसके शासन में अच्छा अनुशासन था। चोरी और घूसखोरी जैसे अपराधों के लिए कठोर दण्ड दिये जाते थे। इस

बेताल कथाएँ

कारण जनता अनुशासन में थी और अत्यंत सुखी भी थी।

राजा गुणसिंह वेष बदलकर देश का संचार करता और अपराधियों को स्वयं पकड़ लेता था। इसी प्रकार राजा वेष बदलकर नारायणपुर में गया। वहाँ पर सुना कि उस गाँव का न्यायाधिकारी धनगुप्त घूसखोर है। इसकी सचाई का पता लगाने के लिए राजा ने एक योजना बनाई। इस योजना के अनुसार राजा गुणसिंह तथा उसके मंत्री वेष बदलकर धनगुप्त के घर गये और दोनों के बीच एक विवाद की सृष्टि की। गवाह की दृष्टि से मंत्री का पक्ष न्यायसंगत मालूम होता था। धनगुप्त ने सारी बातें सुनकर दूसरे दिन फ़ैसला सुनाने का आश्वासन दिया। उस रात को राजा ने गुप्त रूप से धनगुप्त से मिलकर बताया कि यदि उसके पक्ष में फ़ैसला करें तो वह धनगुप्त को सौ मोहरें बख्शीस देगा। धन के लोभ में पड़कर दूसरे दिन धनगुप्त ने राजा के पक्ष में फ़ैसला सुनाया।

फ़ैसला के बाद राजा तथा मंत्री ने अपने असली रूप प्रकट किये और धनगुप्त को बन्दी बनाकर राजधानी में ले गये। वहाँ पर सुनवाई करके धनगुप्त को मृत्यु दण्ड सुनाया गया। तत्काल उसे अमल भी किया गया।

राजा की इस करनी की नारायणपुर के कई लोगों ने निंदा की। सबको लगा कि घूसखोरी के अपराध के लिए मृत्यु दण्ड सुनाना हद से ज्यादा है।

केवल धनगुप्त के पुत्र विष्णुगुप्त ने राजा की निंदा नहीं की। वह बड़ा ही आदर्शवादी था। उसका विश्वास था कि समर्थता पूर्वक शासन करनेवाला राजा चाहे जिस प्रकार का भी दण्ड-विधान अमल करे, वह बुरा नहीं है। उसके पिता का अपराध दण्डनीय है।

कालांतर में विष्णुगुप्त अपनी शिक्षा समाप्त कर राजदरबार का कर्मचारी बना। उसके आदर्श ऊँचे थे। वह

विश्वासपात्र और तेज था, इस कारण शीघ्र ही वह राजा के अंतरंगी सलाहकारों में एक बना। उन्हीं दिनों में पांचाल देश पर एक शत्रु राजा ने हमला किया। प्रारंभ में ही पांचाल सेनाएँ बुरी तरह मार खा गईं। लगा कि पांचाल देश का पराजित होना निश्चित है।

उस स्थिति में गुणसिंह ने शत्रु राजा को धोखा देकर मारने की योजना बनाई। उसने विष्णुगुप्त को यह योजना बताई– शत्रु शिविर के एक अंगरक्षक के द्वारा शत्रु राजा का वध कराया जा रहा है, उसके इस कार्य के लिए एक लाख मोहरें विष्णुगुप्त के हाथ देकर शत्रु शिविर के अंगरक्षक को पहुँचाने का आदेश दिया।

विष्णुगुप्त ने एक लाख मोहरें लेकर शत्रु शिविर में जाने तथा अंगरक्षक को वह धन पहुँचाने को भी मान लिया। मगर उसने ऐसा नहीं किया। सीधे शत्रु राजा के पास गया। उसके वध की सारी योजना बताई। साथ ही पांचाल देश के सारे सैनिक-रहस्य बताकर अनेक प्रकार से शत्रु राजा की सहायता की, परिणाम स्वरूप बड़ी आसानी से शत्रु राजा को विजय प्राप्त हुई।

उस युद्ध में विष्णुगुप्त ने स्वयं राजा गुणसिंह का वध किया। मारने के पहले उसने गुणसिंह से बताया कि वह अपने पिता की मृत्यु का बदला ले रहा है। शत्रु राजा ने अपनी ओर से पांचाल देश

का शासन करने के लिए विष्णुगुप्त को नियुक्त किया। विष्णुगुप्त ने भी गुणसिंह की भाँति समर्थता पूर्वक शासन किया। लेकिन उसने अपराधियों को कठिन दण्ड न देकर अपराधों के अनुरूप दण्ड दिया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा– "राजन, यह बताओ कि विष्णुगुप्त प्रारंभ से ही राजद्रोह की प्रकृति का था या अचानक उसका मन बदल गया? यदि बदल गया तो इसका कारण क्या है? राज्य का लोभ है? अथवा लाख मोहरें हड़पने की लालसा? अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने की भावना उसके मन में अचानक क्यों पैदा हो गई है? राजा के अंतरंग सलाहकार के रूप में वह जब भी उसका वध कर सकता था न? इन संदेहों का समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने यों कहा– "विष्णुगुप्त प्रारंभ में सचमुच राजभक्ति रखता था। उसने पहले यह मान लिया था कि उसके पिता को राजा ने जो मृत्यु दण्ड दिया, वह उसके पिता के अपराध तथा घूसखोरी के लिए सर्वदा उचित दण्ड ही है। मगर वही राजा युद्ध में विजय के वास्ते शत्रु राजा के अंगरक्षक को एक लाख मोहरें घूस देने को तैयार हो गया। इसके लिए अगर मृत्युदण्ड न्याय संगत है तो राजा का वध करना भी अनिवार्य है। यदि वह सही दण्ड नहीं है तो उसके पिता ने दण्ड नहीं भोगा, बल्कि उसका वध किया गया है, इसका बदला लेना विष्णुगुप्त का कर्तव्य है। चाहे जिस किसी भी दृष्टि से देखें, विष्णुगुप्त के व्यवहार में दोष नहीं ढूंढा जा सकता। उसके ऊँचे आदर्शों के सामने राजभक्ति पराजित हो गई। यही उसके मानसिक परिवर्तन का कारण है।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

ज्ञानोदय

कई शताब्दियों के पहले वंग राज्य पर राजा मलयसिंह शासन करता था। वंग देश के पड़ोसी राज्य अंग देश पर राजसिंह राज्य करता था। दोनों देशों के राजा और प्रजा के बीच रिश्ते-नाते थे। साथ ही परस्पर सहयोग भी रहा करता था।

एक बार कलिंग राजा चन्द्रवर्मा ने अचानक अंगराज्य पर हमला किया। अंगराजा राजसिंह और उसकी सेनाओं ने वीरतापूर्वक युद्ध किया, फिर भी उन्हें पराजित होना पड़ा। राजसिंह ने वंगदेश में जाकर मलयसिंह का आश्रय लिया। वास्तव में राजसिंह कोई समर्थ शासक नहीं था, फिर भी अंगदेश की पराजय को वंगदेश की प्रजा ने अपनी पराजय मानी। मलयसिंह ने राजसिंह के प्रति सहानुभूति दिखाई। वह चाहता तो राजसिंह की पराजय का बदला ले सकता था, न मालूम क्यों ऐसा कोई प्रयत्न किये बिना वह चुप रहा।

एक बार मलयसिंह ने गुप्त रूप से अपने अंगरक्षकों के साथ अंगराज्य में प्रवेश किया। वहाँ पर उसे जनता के भीतर किसी प्रकार का असंतोष और आन्दोलन दिखाई न दिया। नये राजा चन्द्रवर्मा के प्रति जनता में न द्वेष की भावना दिखाई दी और न पराजित राजा के प्रति कोई चिंता या दुख! सभी लोग इस प्रकार अपने अपने कार्यों में मग्न थे, मानो कुछ हुआ ही नहीं।

कई दिन बीत गये। पर मलयसिंह ने अंगराज्य को कलिंग राजा से मुक्त करने का कोई प्रयत्न नहीं किया। इसे देख राजसिंह ने सोचा कि उसका अपमान किया जा रहा है। वह एक दूसरे पड़ोसी

आनंदकुमार शर्मा

राजा के आश्रय में गया। उस राजा से प्राप्त सैनिकों के द्वारा चन्द्रवर्मा पर हमला किया। लेकिन उसे इस बार भी मुंह की खानी पड़ी।

चन्द्रवर्मा को मालूम हो गया कि राजसिंह की सहायता करनेवाले शक्तिशाली राजा कोई नहीं है। वह आज तक मलयसिंह से डरता था। पर उसे स्पष्ट रूप से यह विदित हुआ कि मलयसिंह राजसिंह की सहायता बिलकुल नहीं करेगा। इसलिए राजसिंह को एक दूसरे के आश्रय में जाना पड़ा।

इस कारण उधर चन्द्रवर्मा ने अंगराज्य के शासन में अनेक खास परिवर्तन किये और नये राजकीय विधान अमल किये। मुख्य पदों पर कलिंग के निवासियों को नियुक्त किया। उन्हें ऊँची-ऊँची तनख्वाहों के साथ अनेक सुविधाएँ भी दी गईं। कलिंग के उद्योगों को अधिक प्रोत्साहन दिया गया। कलिंग में उत्पादित वस्तुएँ ही अंग देश में बेची जाने लगीं। ऐसी व्यवस्था की गई जिस से कलिंग अंगदेश को आर्थिक दृष्टि से लूट सके और कलिंग सब प्रकार से संपन्न बने। इस कारण सहज ही अंगदेश की प्रजा की गरीबी बढ़ गई, उनका असंतोष भी बढ़ता गया। साथ ही कलिंगवासियों की संपत्ति व सुख-सुविधाएँ बढ़ती गईं।

अंगदेश के कुछ नागरिक जो राजनीति का ज्ञान रखते थे, उन लोगों ने इस बात

को भाँप लिया और राजा के सम्मुख अपना असंतोष प्रकट किया । चन्द्रवर्मा ने सोचा कि भविष्य में ऐसे लोगों के द्वारा उसके शासन को भयंकर खतरा उत्पन्न होगा, और इस विचार से उन पर झूठ-मूठ अपराधों का आरोप करके उन्हें मृत्यु दण्ड सुनाये ।

इसे देख जनता में असंतोष व्याप्त हो गया । कुछ लोगों ने वंगदेश में जाकर मलयसिंह को असली स्थिति समझाई और उससे निवेदन किया कि चन्द्रवर्मा के दुष्ट शासन से उनकी रक्षा करें। मगर मलयसिंह ने उनके सुझाव के प्रति कोई अधिक रुचि न दिखाई, और न कोई संतोषजनक उत्तर ही दिया। वे इस बात पर दुखी हो अपने देश को लौट गये कि मलयसिंह ही उनकी उपेक्षा करें तो उनकी रक्षा करनेवाले और कोई नहीं हैं ।

इसके बाद साधारण प्रजा तथा युवकों में भी विद्रोह हुआ । चन्द्रवर्मा ने उसे दबाने का बड़ी क्रूरतापूर्वक प्रयत्न किया ।

उन दिनों में मलयसिंह ने एक और बार वेष बदलकर अंगदेश में प्रवेश किया। जनता में चन्द्रवर्मा के प्रति द्वेष उत्पन्न हुआ था । वे अब शासन का विरोध करते हुए गुप्त रूप से विद्रोह की तैयारियाँ करने लगे थे । राजनैतिक तंत्र तथा जनता के बीच भीतर भीतर ही तीव्र संघर्ष होने लगा था ।

मौक़ा पाकर मलयसिंह ने अचानक चन्द्रवर्मा के राज्य पर दोनों ओर से आक्रमण कर दिया। अचानक यह जो भयंकर हमला हुआ, चन्द्रवर्मा उसका सामना न कर पाया। जब जनता को मालूम हुआ कि मलयसिंह ने हमला कर दिया है; तब जनता ने चन्द्रवर्मा के प्रति प्रकट रूप में विद्रोह कर दिया और चन्द्रवर्मा के राजतंत्र को ध्वस्त किया। चन्द्रवर्मा हारकर मलयसिंह के हाथों में बन्दी बना।

मलयसिंह ने राजसिंह को बुला भेजा। उसे अंगराज्य का शासन-भार फिर से सौंपते हुए समझाया–"दोस्त, चन्द्रवर्मा से युद्ध करके तुम हार गये, इसके लिए मैं तुम्हें दोष नहीं देता। लेकिन मैंने देखा कि तुम्हारी प्रजा जब चन्द्रवर्मा के अधीन आ गई, तब उन लोगों ने कोई विद्रोह नहीं किया। इससे मैंने समझ लिया कि तुम्हारे प्रति तुम्हारी प्रजा का कोई विशेष आदर का भाव नहीं है। यह तुम्हारी भूल थी। तुम अपने शासन काल में अपनी प्रजा के विश्वास का संपादन न कर पाये। फिर भी तुम मेरे रिश्तेदार और मित्र हो, इसलिए यदि मैं चाहता तो तुम्हारी सहायता करके उसी दिन चन्द्रवर्मा को हरा देता। लेकिन इससे जनता का और तुम्हारा भी कोई प्रयोजन सिद्ध न होता। कोई दूसरा बलवान राजा तुम्हारा यही हाल कर देता, इसलिए मैं तब तक इंतज़ार करता रहा जब तक तुम्हारी प्रजा में स्वेच्छा की भावना और आत्मरक्षा का भाव पैदा न होता। अब अंगदेश की प्रजा इन दोनों बातों को समझ गई। अब वे लोग तुम पर आधारित न होंगे। तुम आइंदा चेतनाशील प्रजा पर शासन करनेवाले हो। अब तुम्हारे देश को कोई जीत नहीं सकता।"

राजसिंह इस बात पर पछताने लगा कि वह मलयसिंह के हृदय को आज तक समझ न पाया। इसके बाद जनता के सहयोग से वह पहले से कहीं अधिक समर्थतापूर्वक शासन करने लगा।

१७६. जियस मंदिर के खण्डहर

एथेन्स (ग्रीस) के पास ग्रीकों के द्वारा निर्मित भव्य मंदिर है। इसके खण्डहर आज इस रूप में बचे हुए हैं। कहा जाता है कि जल प्रलय के अंत में पानी यहीं पर घट गया था। पंडितों का विचार है कि आर्यों का देवता "धौस" नाम का दूसरा रूप ही "जियस" है।
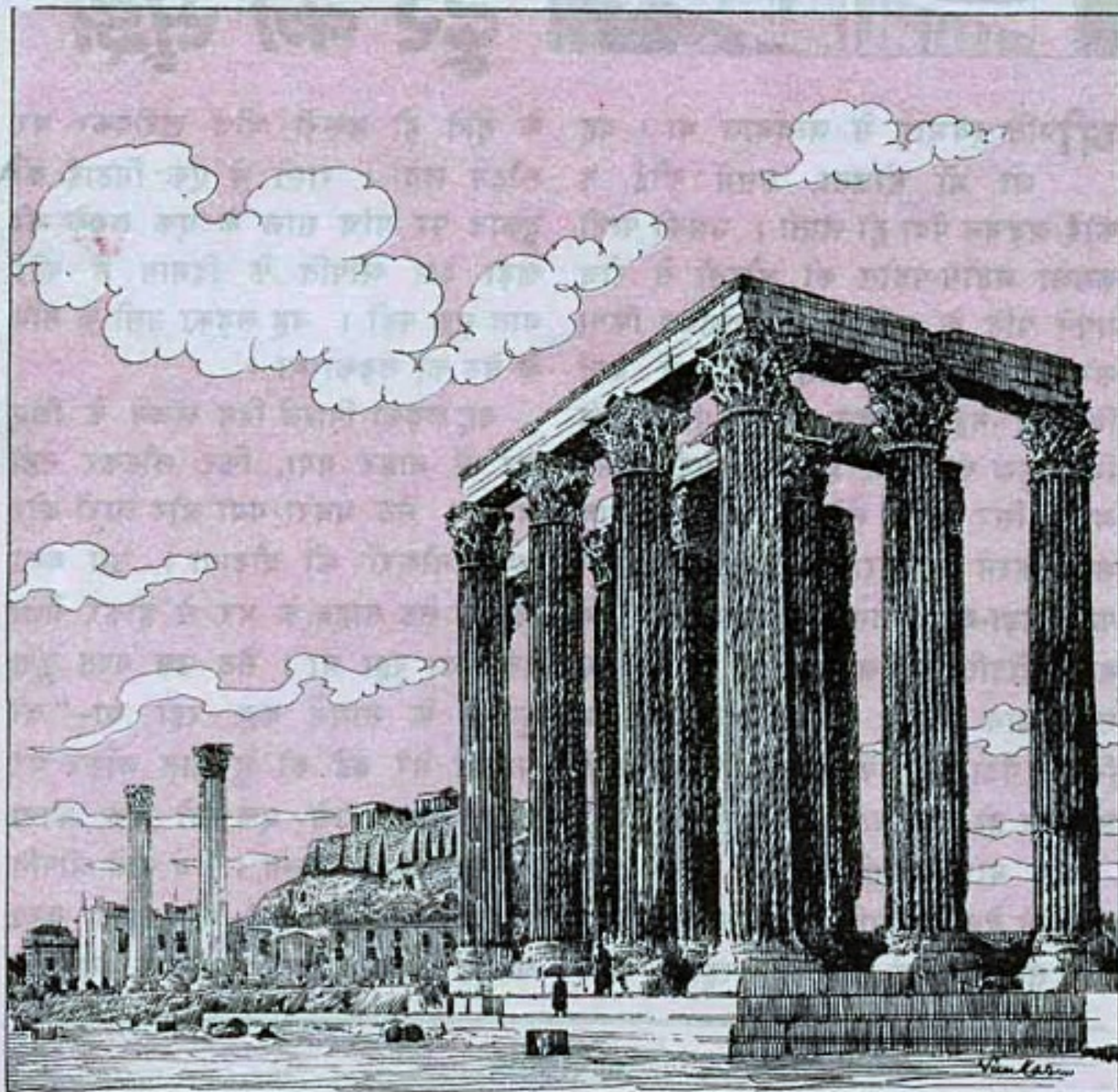
दूर की सूझ

श्रीपति स्वभाव से जल्दबाज था। वह जो भी सोचता, उसमें कोई न कोई अड़चन पैदा हो जाती। उसकी पत्नी कमला अड़ोस-पड़ोस की औरतों से रोज अपने पति के बारे में यों शिकायत किया करती थी–"मेरे पति दूर की बातें बिलकुल नहीं सोचते। आगे-पीछे सोचे बिना कुछ कर बैठते हैं और सारी झंझट अपने सिर मोल लेते हैं। उनके साथ शादी करने के अपराध में मुझे भी उसका फल थोड़ा-बहुत भोगना ही पड़ता है।" ये बातें श्रीपति को खटकती थीं। इसलिए उसके मन में यह साबित करने का दृढ़ विचार पैदा हुआ कि मैं भी दूर की बातें सोचकर ही कोई काम करता हूँ।

एक बार पड़ोसी गाँव में मेला लगा था, उसे देखने श्रीपति अकेले चला गया। शाम तक वह मेले में घूमता रहा। शाम के होते ही जरूरी चीजें खरीदकर घर लौटने लगा। रास्ते में एक मिठाई की दूकान पर पांच साल के एक लड़के को खड़ा देख श्रीपति के दिमाग में कोई बात सूझ पड़ी। वह लड़का उसी के गाँव के सेठ का लड़का था।

वह लड़का पिछले दिन खेलने के लिए घर से बाहर गया, फिर लौटकर नहीं आया। सेठ घबरा गया और चारों ओर अपने नौकरों को दौड़ाया। उस वक़्त श्रीपति सेठ साहब के घर से होकर मेला देखने जा रहा था। सेठ उस वक़्त कुछ बुजुर्गों के सामने कह रहा था–"जो आदमी मेरे बेटे को सुरक्षित लाकर घर पहुँचा देगा, उसे एक सौ एक रुपया पुरस्कार दिया जाएगा।" ये बातें श्रीपति के कानों में पड़ गईं थीं। उस वक़्त श्रीपति ने उन बातों पर कोई ध्यान न

बनवारीलाल

दिया, लेकिन अचानक मेले में उसे वह लड़का दिखाई दिया।

श्रीपति ने झट से लड़के को गोद में लेकर पूछा–"बेटा! मिठाई खाओगे?"

लड़के ने स्वीकृति सूचक सिर हिलाया।

श्रीपति ने पांच रुपये खर्च करके तरह तरह की मिठाइयाँ और खिलौने खरीदकर लड़के के हाथ दिये। इसके बाद उसे अपने कंधे पर बिठाकर अपने घर पहुंचा और दर्वाजा खटखटाया।

दर्वाजा खोलकर श्रीपति की पत्नी कमला ने पूछा–"यह लड़का कौन है? इसे क्यों मेले से पकड़ लाये? कहीं ये सब खिलौने पैसे देकर तो तुम ने इस लड़के के वास्ते नहीं खरीदे?"

श्रीपति ने खीझकर कहा–"मुझे भीतर तो आने दो, फिर इसकी बाबत सारी कहानी सुना देता हूं। यह सेठ साहब का लड़का है। गुम हो गया था। इसे सौंपने पर सेठ साहब एक सौ एक रुपये का पुरस्कारा देंगे।"

कमला ने नाक-भौं सिकोड़कर कहा–"जितने भी रुपये दे, तो फ़ायदा ही क्या? कामाक्षी ने जैसी साड़ी पहनी है, वैसी न मालूम तुम खरीदकर दोगे या नहीं, फिर भी यह बताओ कि इस लड़के

को यहां पर क्यों लाये? सेठ के घर सीधे क्यों न ले गये?"

"तुम्हारे दिमाग में गोबर भरा है। तुम दूर की बातें क्या जानो? लड़के को सौंपने के बाद सेठ साहब अंगूठा दिखा दे तो हम क्या कर सकते हैं? गवाह ही कहां है? सवेरा होते ही बड़े बुजुर्गों को साथ लेकर सेठजी के घर जायेंगे तो चुपचाप सारे रुपये दे देंगे।" श्रीपति ने समझाया।

अपने पति की दूर की सूझ पर कमला मुग्ध हो गई।

लड़का खाना खाकर दूध पीकर थोड़ी देर खेलता रहा और फिर सो गया।

श्रीपति यह सोचकर लड़के की बगल में ही सो गया कि वह कहीं भाग न जाय।

बड़े सवेरे दर्वाजे पर दस्तक हुई, श्रीपति ने आँखें मलते हुए दर्वाजा खोला। सामने चार राजभटों को देख श्रीपति की नींद की खुमारी जाती रही।

राजभटों ने श्रीपति को धक्का दिया, घर के भीतर जाकर सेठ के लड़के को देखा, तब वे लोग श्रीपति से बोले–"चलो, राजा के पास। छोटे बच्चों को चोरी से उठा लाना बड़ा अपराध है। हमने पूछताछ किया तो हमें मालूम हुआ कि कल मेले से तुम इस लड़के को उठा लाये हो।"

श्रीपति के चेहरे पर काटो तो खून नहीं उसने लड़के के गुम हो जाने का सारा समाचार सुनाकर कहा–"मेले में इस लड़के को देख में सेठ साहब को सौंपने के लिए अपने साथ लाया हूँ। मैंने पिछले दिन ही सुन रखा था कि लड़का गुम हो गया है।"

राजभटों ने कहा–"हम ने सुना है कि लड़का खेलने गया और किसी के घर सो गया। फिर थोड़ी देर बाद वह मिल भी गया। पर जब कल सेठ साहब का पूरा परिवार मेले में गया, तब लड़का गुम हो गया। तुम उसे उठा लाये, तो सेठ साहब को तुरंत क्यों सौंप न दिया? तुम ने किसी दुरुद्देश से ही लड़के को अपने घर में छिपाया है।" श्रीपति ने अनेक प्रकार से उन्हें समझाना चाहा कि मेरा उद्देश धोखा देना नहीं है, पर राजभटों ने उसकी एक न सुनी और उसे राजा के पास घसीट ले गये।

इसके बाद श्रीपति ने अपने को निर्दोष साबित करने के लिए काफ़ी रुपये खर्च किये। श्रीपति के घर लौटने पर उसकी पत्नी ने अपनी पुरानी आदत के अनुसार कहा–"तुम में दूर दृष्टि बिलकुल नहीं है, दूर की सूझ होती तो हम कभी के सुधर जाते।"
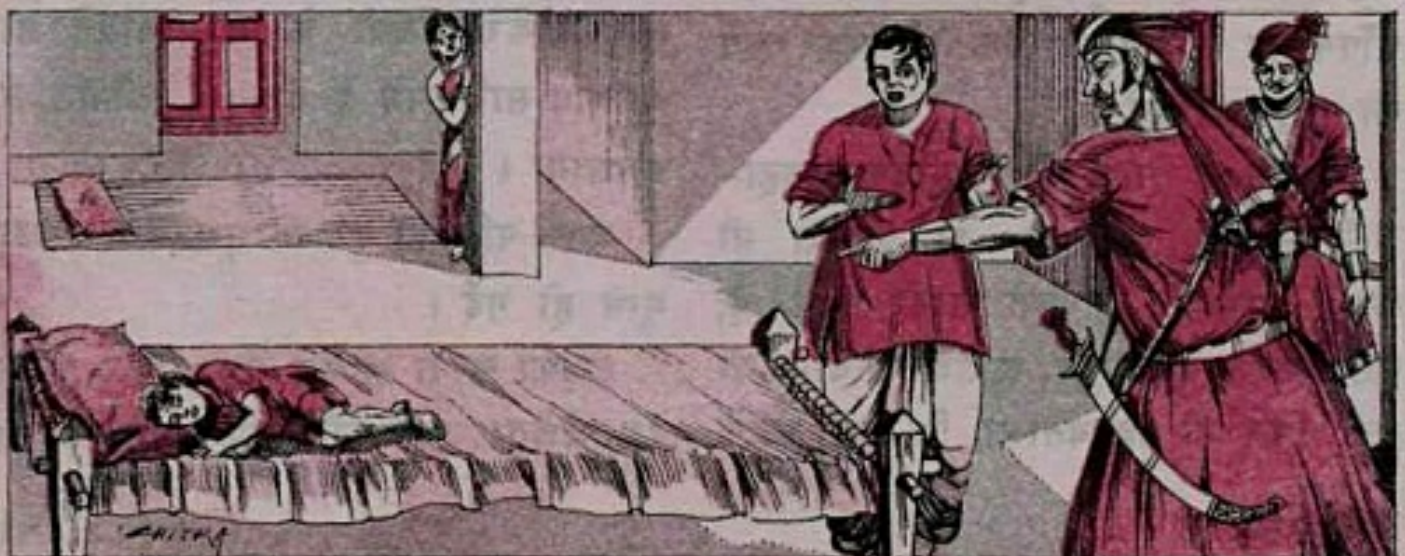
अक्ल का पुतला

एक गाँव में एक ब्राह्मण दंपति थे। उन्हें कोई संतान न थी, फिर भी कंजूस ऐसे थे कि भर पेट खाना तक न खाते थे।

एक बार उस गाँव में मेला लगा। ब्राह्मण दंपति यह सोचकर घबरा गये कि मेला देखने रिश्तेदार व परिचित लोग आ धमकेंगे। ब्राह्मण को कुछ न सूझा कि क्या किया जाय, उसने अपनी पत्नी की सलाह माँगी। पत्नी ने सुझाया–"कोई रिश्तेदार आवे तो ऐसा अभिनय करेंगे कि हम सख्त बीमार हैं।"

मेले के प्रथम दिन ही ब्राह्मण ने मेले में अपने दो रिश्तेदारों को देखा, उसने भाँप लिया कि वे शाम को जरूर घर आयेंगे। उसने अपनी पत्नी से यह बात बताई। जब शाम को दोनों रिश्तेदार घर लौटे, तब ब्राह्मण दंपति खाट पर कराह रहे थे।

इस पर दोनों रिश्तेदार यह कहते चल पड़े–"मेले की बात भगवान जाने, यह अनाथ दंपति बड़ी मुसीबत में हैं। तुरंत सभी रिश्तेदारों को सूचित करना है।"

उनके जाते ही ब्राह्मण दंपति यह सोचकर खुश हो उठ बैठे कि उनकी चाल चल निकली, लेकिन दूसरे दिन लगभग पचास रिश्तेदार उनके घर आ पहुँचे। ब्राह्मण दंपति की समझ में न आया कि ऐसा क्यों कर हुआ? पर वे रिश्तेदार दस दिन रहें, मेला देखकर तब चले गये।

गधे का संगीत

मगध देश पर धवलसेन नामक एक राजा शासन करता था। एक दिन उसके दरबार में एक भाट आया, राजा की प्रशंसा में कविता सुनाकर उसे संगीत में नारद और तुंबुर से भी बढ़कर महान बताया।

धवलसेन आश्चर्य चकित हुआ। इसके पूर्व उसके दरबार में जो भी चारण और भाट आये, उन लोगों ने यही कहा था कि पराक्रम में वे अर्जुन से महान हैं। धवलसेन ने सोचा था कि शायद यह बात सच हो! क्योंकि उसे कभी युद्धक्षेत्र में जाने का मौक़ा न मिला था। इसी प्रकार संपत्ति में उसकी तुलना कुबेर से की गई थी। राजा नहीं जानता था कि कुबेर के पास कितना धन था। इसलिए इस बात को भी उसने सच माना। इसी प्रकार अनेक प्रकार की झूठी प्रशंसाओं को उसे सत्य मानना पड़ा था, क्योंकि उन्हें झूठा साबित करने के लिए कोई मौक़ा उसे न मिला।

मगर संगीत की बात ऐसी न थी। वह लोगों के सामने गाकर उसे साबित कर सकता है। इसके पूर्व जितने भी चारणों ने उसकी तारीफ़ की, उन लोगों ने उसके संगीत की प्रशंसा न की थी। इसी भाट ने पहली बार यह समस्या ला खड़ी कर दी थी।

राजा ने मंत्री को बुलाकर बताया कि वह राजदरबार में अपना संगीत गाकर सुनाना चाहता है। राजा का स्वर सुनते ही उसके संगीत की कल्पना सहज की जा सकती थी। मंत्री यह सोचकर डर गया कि भरे दरबार में राजा का अपमान होगा। उसने कहा–"महाराज इसमें कोई संदेह नहीं है कि आप का संगीत

अद्‌भुत होगा। लेकिन इसके पूर्व आप को संगीत का थोड़ा अभ्यास करना अच्छा होगा। दरबार के समाप्त होते ही हम दोनों उद्यान में जायेंगे। वहाँ पर आप अपने संगीत की साधना कर सकते हैं।"

राजा ने मंत्री की बात मान ली। उद्यान में मंत्री के समक्ष राजा धवलसेन कर्णकटु संगीत का गायन कर रहा था, तभी अचानक उनके सामने एक गधा प्रत्यक्ष हुआ। राजा ने गाना रोककर पूछा–"यह क्या है? यहाँ पर गधा आ गया है!"

राजा का गीत सुनकर न मालूम कैसे, गधा उद्यान में प्रवेशकर गया था। वह गधा राजा की परिक्रमा करने लगा। राजा ने अपने संगीत का प्रभाव स्वयं समझ लिया और मंत्री से बोला–"मंत्री, आज के लिए संगीत यहीं समाप्त है।"

दोनों जब चल रहे थे, तब गधा उनके पीछे चलने लगा। राजा ने खीझकर नौकरों से कहा–"तुम लोग इस गधे को यहाँ से खदेड़ दो।"

उस दिन शाम को जब राजा और रानी उद्यान में टहल रहे थे, तब वही गधा रेंकते हुए आया और राजा के सामने आ खड़ा हुआ। रानी ने खीझकर पूछा–"यह क्या? यह गधा यहाँ पर क्यों आया है?" राजा ने फिर गधे को बाहर खदेड़वा दिया।

मगर उस दिन से राजा जब भी उद्यान में प्रवेश करता, गधा हाज़िर हो जाता।

उसे नौकर बड़ी दूर तक खदेड़कर लौट आते, पर वह किसी न किसी तरह उद्यान में पहुँच ही जाता था। यदि उसके उद्यान में प्रवेश करने से रोकते हुए भारी तैयारी की जायगी तो यह बात प्रजा में प्रकट हो जाएगी। इसलिए राजा ने उसे उद्यान में ही रखने का प्रबंध किया। लेकिन जब भी राजा को वह गधा दिखाई देता, तब उसे अपने संगीत की याद आ जाती और राजा को बड़ा दुख होता।

धवलसेन को लगा कि बचपन से ही यदि उसने संगीत का अभ्यास किया होता तो अच्छा होता। इसलिए उसने निश्चय किया कि कम से कम उसके पुत्र को संगीत अवश्य सिखलाया जाय!

राजकुमार सत्यसेन सोलह साल की उम्र का था। उसने राजोचित सारी विद्याएँ सीख ली थीं, मगर संगीत का अभ्यास न किया था। उसका विश्वास था कि उसका स्वर संगीत के अभ्यास के लिए उपयुक्त नहीं है। मगर पिता के प्रोत्साहन पर उसने संगीत सीखना चाहा। संगीत सिखाने के लिए संगीत आचार्य को राजा ने नियुक्त किया।

संगीत की साधना का प्रबंध राजोद्यान में ही किया गया। राजा ने उद्यान में चारों तरफ़ कड़ा पहरा बिठा दिया। राजा के मन में इस बात का डर था कि उसके पुत्र का संगीत सुनकर शायद एक और गधा आ धमके!

संगीत का पहला पाठ प्रारंभ हुआ। संगीताचार्य ने एक गीत का आलाप करके सत्यसेन से उसका अनुसरण करने को कहा। सत्यसेन का गायन राजा को बड़ा ही दुर्भर प्रतीत हुआ।

संगीत के प्रारंभ होते ही उद्यान में बंधा हुआ गधा रस्सा तोड़कर भाग खड़ा हुआ। इसके बाद उस गधे ने फिर कभी उद्यान में प्रवेश नहीं किया।

सत्यसेन के संगीत का अभ्यास तत्काल राजा धवलसेन ने रुकवा दिया। पर सदा के लिए उसे गधे का पिंड छूट गया।

रनिवास

समुद्र के किनारे मछुआरों के एक परिवार की लड़की चंद्रा बड़ी ख़ूबसूरत थी। पड़ोसी घर का सूरज और चंद्रा बचपन से ही साथ-साथ खेलते थे। उनके बीच गहरी दोस्ती थी। सब लोग यही सोचा करते थे कि उन दोनों की शादी होगी। चंद्रा की दादी हंसकर कहा करती थी कि हमारी चंद्रा की शादी किसी राजकुमार के साथ ही होगी।

चंद्रा युक्तवयस्का हो गई। एक दिन एक ज्योतिषी ने चंद्रा का हाथ देखकर बताया–"तुम्हें रनिवास का योग है। तुम्हारे साथ शादी करनेवाला व्यक्ति ज़रूर राजा बनेगा।" चन्द्रा ने ज्योतिषी की बात पर यक़ीन किया। उसने पहले की भांति सूरज से बात करना बंद किया।

एक दिन सूरज ने चन्द्रा से पूछा–"अरी चन्द्रा! क्या हम शादी कर ले?"

"मैं ज़िंदगी भर अविवाहित भी रह सकती हूँ, पर मछली पकड़नेवाले के साथ में शादी न करूँगी।" चन्द्रा ने कहा।

सूरज का दिल टूट गया। उसने सोचा कि जहाँ तक हो सके, चन्द्रा से दूर रहना है। वह अपनी नाव पर सवार हो समुद्र पर चल पड़ा। वह समुद्र में मछलियाँ पकड़ते हुए कई दिनों बाद एक टापू में जा पहुँचा। उस वक़्त सूरज के पास खाने के लिए सिर्फ़ एक बड़ी मछली बच रही थी। उसने मछली को काटा, मछली के पेट में उसे एक बहुत बड़ा रत्न दिखाई दिया।

रत्न को देखने पर सूरज ने सोचा। उस रत्न को बेचने पर उसे ज्यादा धन मिल सकता है। उस धन के साथ अपने गाँव लौटने पर चन्द्रा के साथ शादी की जा सकती है। फिर उसने सोचा कि उस रत्न

श्याम सुंदर

का मूल्य राजा ही दे सकते हैं, यह सोचकर वह राजमहल की ओर बढ़ा।

राजमहल में कोई उत्सव मनाया जा रहा था। राजदरबार में बड़ी भीड़ लगी हुई थी। दरबार में राजा, रानी और राजकुमारी भी थीं। कई राजकुमार उपहार लाकर दे रहे थे। सूरज ने राजकुमारी को देखते ही पुकारा–"चन्द्रा!"

सूरज को पता चला कि चन्द्रा की शादी होने जा रही है। सूरज भीड़ को ढकेलते हुए आगे बढ़ा और बोला–"चन्द्रा! क़िस्मत की बात थी कि मैं ठीक तुम्हारी शादी के वक़्त यहाँ पर पहुँच गया। मेरी भेंट के रूप में यह रत्न ले लो।" ये शब्द कहकर उसने चन्द्रा के हाथ रत्न रख दिया और लौटने को हुआ।

राजा ने सूरज को बुलाकर पूछा–"तुम कौन हो? क्या तुम चन्द्रा को जानते हो?" सूरज ने अपनी सारी कहानी संक्षेप में सुनाई। इस बीच जौहरी ने कहा–"यह युवक जो रत्न लाया है, सब से ज्यादा क़ीमती है।" राजा ने वास्तविक समाचार सूरज को सुनाया।

कुंतल राजा के कोई संतान न थी। रानी एक कन्या के वास्ते विकल थी। राजा के दूतों ने एक अपूर्व सुंदरी की खोज में अनेक देश घूमकर आखिर चन्द्रा को चुन लिया। उसके माता-पिता को मुँह-मांगा धन देकर उसे राजमहल म ले आये। राजा ने चन्द्रा को दत्त पुत्री बनाया, तुरंत उसके विवाह का भी संकल्प करके यह घोषणा की कि जो व्यक्ति सब से अधिक मूल्यवान वस्तु उपहार में देगा, उसी के साथ चन्द्रा का विवाह किया जाएगा। इसीलिए उस दिन कई लोग आकर उपहार दे रहे थे।

आखिर सूरज का ही उपहार सब से ज्यादा मूल्यवान साबित हुआ, इसलिए चन्द्रा सूरज की ही पत्नी बनी। ज्योतिषी के बताये अनुसार चन्द्रा न केवल रनिवास में आ गई, उसके साथ शादी करके सूरज भी राजा बन गया।

वैद्य का रहस्य

वेंकटाचार्य नामक आयुर्वेद वैद्य अपने गाँव में जीविका चलाना मुश्किल देख परिवार के साथ एक शहर में गया। एक अमीर के घर में छोटा-सा हिस्सा किराये पर लेकर दवाइयाँ बेचते अपने दिन काटने लगा।

एक दिन वैद्य की पत्नी ने कहा–"हमारी हालत में कोई परिवर्तन नहीं है। इस घर के मालिक को तो देखिए, प्रति दिन दही के बिना खाना तक नहीं खाते।"

"तब तो मैं जल्द ही तुम्हें कर्णफूल बनवाकर दूंगा।" वैद्य ने उत्तर दिया

वैद्य के कमरे और घर के मालिक के कमरे के बीच केवल दीवार रोड़ा बनी थी, एक दिन रात को घर का मालिक अपनी पत्नी से कह रहा था–"दही में मिलाने के लिए थोड़ा नमक लेती आओ।" वैद्य के कानों में ये बातें पड़ीं। वैद्य ने धीरे से अपनी पत्नी से कहा–"तुम्हारा एक कर्णफूल जाता रहा।"

दूसरे दिन घर का मालिक कह रहा था–"अरी, दही खट्टा है। थोड़ा अदरक ले आओ।" "अब तुम्हारा दूसरा कर्णफूल भी जाता रहा।" वैद्य ने कहा।

वैद्य की पत्नी की समझ में कुछ न आया। इस पर वैद्य ने समझाया–"रात के वक़्त दही खाना तबीयत के लिए अच्छा नहीं है। मैंने सोचा कि घर का मालिक बीमार पड़ जाय तो उसका इलाज करके तुम्हारे लिए कर्णफूल खरीदना चाहा, मगर दही के साथ नमक खाने से आधी खराबी नष्ट हो जाती है, अदरक मिलाने से बिलकुल। यह रहस्य जाननेवाला व्यक्ति मेरे पास इलाज कराने क्यों कर आवेगा?"

पहलवान की प्रतिभा

एक जमीन्दार के यहाँ सिद्ध गोपाल नामक एक पहलवान था। जमीन्दार को इस बात का गर्व था कि सिद्ध गोपाल जैसा पहलवान उसकी कचहरी में है। जमीन्दार कुश्ती के प्रति ज्यादा शौक रखता था। वह प्रत्येक पूर्णिमा के दिन कुश्ती की प्रतियोगिताएँ चलाया करता था। सिद्ध गोपाल और बाहर से आनेवाले पहलवान के बीच कुश्ती होती थी। सिद्ध गोपाल बड़े से बड़े पहलवान को भी पछाड़ देता था। जमीन्दार सिद्ध गोपाल को एक हज़ार रुपये पुरस्कार में दिया करता था। कई साल गुजर गये। जमीन्दार का विश्वास था कि सिद्ध गोपाल जैसे पहलवान के रहते उसकी रियासत को हार देखने का मौक़ा न मिलेगा।

एक बार जमीन्दार सिद्ध गोपाल को साथ ले पक्षियों का शिकार खेलने गया। दुपहर तक जमीन्दार शिकार खेलता रहा, आखिर थककर वह एक बरगद की छाया में जा बैठा। उसे बड़ी भूख लगी। चारों ओर देखने पर उसे समीप में एक बगीचा दिखाई दिया।

जमीन्दार ने पहलवान से कहा–"सिद्ध गोपाल, उस बगीचे में जाकर, चार-पांच फल तोड़ लाओ।"

सिद्ध गोपाल बगीचे में पहुँचकर फल तोड़ ही रहा था कि उसे यह आवाज सुनाई दी–"अबे कौन है? मुझसे मांगे बिना कौन फल तोड़ रहा है?"

एक झोंपड़ी में से एक दाढ़ीवाला ये शब्द कहते बाहर आया और कड़ककर बोला–"अबे, तुम मेरे बगीचे में घुसने की हिम्मत करते हो? इसका तुम्हें मजा चखाऊँगा।" यह पुकार सुनकर जमीन्दार भी बगीचे के पास पहुँचा।

गजानन सिंह

सिद्ध गोपाल ने समझाया कि ये फल जमीन्दार साहब के लिए ले जा रहा हूँ। उन्हें बड़ी भूख लगी है।

"मैं किसी को अपने बाग के फल न दूंगा। तुम ने ये मेरे फल तोड़े, इसके अपराध में एक हज़ार रुपये चुका दो।"

सिद्ध गोपाल ने आश्चर्य में आकर पूछा–"पांच फलों के लिए एक हजार?"

"मैं अपने फलों का जो भी क़ीमत लूंगा। तुम में इसकी क़ीमत चुकाने की ताक़त नहीं है, तो मेरे बगीचे में आये ही क्यों?" दाढ़ीवाले ने डांटा।

जमीन्दार को यह अच्छा न लगा कि सिद्ध गोपाल जैसे पहलवान को एक साधारण व्यक्ति के मुंह से खरी-खोटी की बातें सुननी पड़े! उसने कहा–"ज़ानते हो, यह कौन है? यह एक असाधारण पहलवान हैं। कुछ ही मिनटों में तुम्हारी हड्डी-पसली तोड़ देंगे।"

जमीन्दार के मुंह से ये शब्द निकलने की देरी थी, बस, दाढ़ीवाला पहलवान पर टूट पड़ा और उसे पल भर में पटक दिया। इसे देख जमीन्दार को बड़ा दुख हुआ। ऐसे बड़े पहलवान का एक साधारण व्यक्ति के हाथों में हार जाना जमीन्दार को अपमान की बात मालूम हुई। घर लौटने के बाद भी जमीन्दार का मन अशांत ही रहा।

सिद्ध गोपाल ने जमीन्दार से बताया–"सरकार! वह मंत्र-तंत्र जानता है।

वरना क्या मुझे वह हरा सकता था?" पर जमीन्दार ने सिद्ध गोपाल की बातों पर यक़ीन नहीं किया।

एक दिन सिद्ध गोपाल पचास अण्डे और दो सेर दूध का सेवनकर बाहर निकला तो कोई पहलवान दर्वाजे पर हाजिर हो सिद्ध गोपाल को प्रणाम करके बोला–"पूर्णिमा के दिन कुश्ती का प्रबंध कराइए।" कुश्ती का प्रबंध करने का अधिकार सिद्ध गोपाल का था। कोई सीधे जाकर जमीन्दार के दर्शन नहीं कर सकता था।

सिद्ध गोपाल ने पहलवान को घर के भीतर बुलाकर समझाया–"तुम नाहक़ क्यों मेरे हाथों में मर जाना चाहते हो? तुम अगर जीत गये तो हमारे जमीन्दार तुम्हें आदेश देंगे कि राक्षसी सुरंग की शिला हटा दो। उस शिला के नीचे अब तक कई लोग दबकर मर गये हैं। तुम बेकार क्यों अपने प्राण खोना चाहते हो?"

"मैं पुरस्कार के लोभ में पड़कर दूर से आया हूं।" नये पहलवान ने कहा।

"प्रतियोगिता का इतजाम करूँगा। तुम जल्द ही हार जाओगे, तो ज़िंदा रह जाओगे। मेरे विजयी होने पर जमीन्दार मुझे एक हज़ार रुपये देंगे, उनमें से आधे रुपये मैं तुम्हें दूंगा।" सिद्ध गोपाल ने समझाया। नये पहलवान ने इस शर्त को मान लिया।

पूर्णिमा के दिन सिद्ध गोपाल तथा नये पहलवान के बीच प्रतियोगिता हुई। नये पहलवान ने पल भर में सिद्ध गोपाल को पछाड़ दिया। इस पर सिद्ध गोपाल चिल्ला उठा–"हार जाओ, वरना...तुम्हारे...प्राणों के लिए खतरा है।"

नये पहलवान ने सिद्ध गोपाल की छाती पर सवार हो अपना वेष हटाया और कहा–"तुम्हारी विद्या की परीक्षा लेने मैंने ऐसा किया है। तुम पहलवान नहीं, खाने का चोर हो!" जमीन्दार को देखते ही सिद्ध गोपाल के होश उड़ गये। उसी दिन उसकी नौकरी छूट गई।
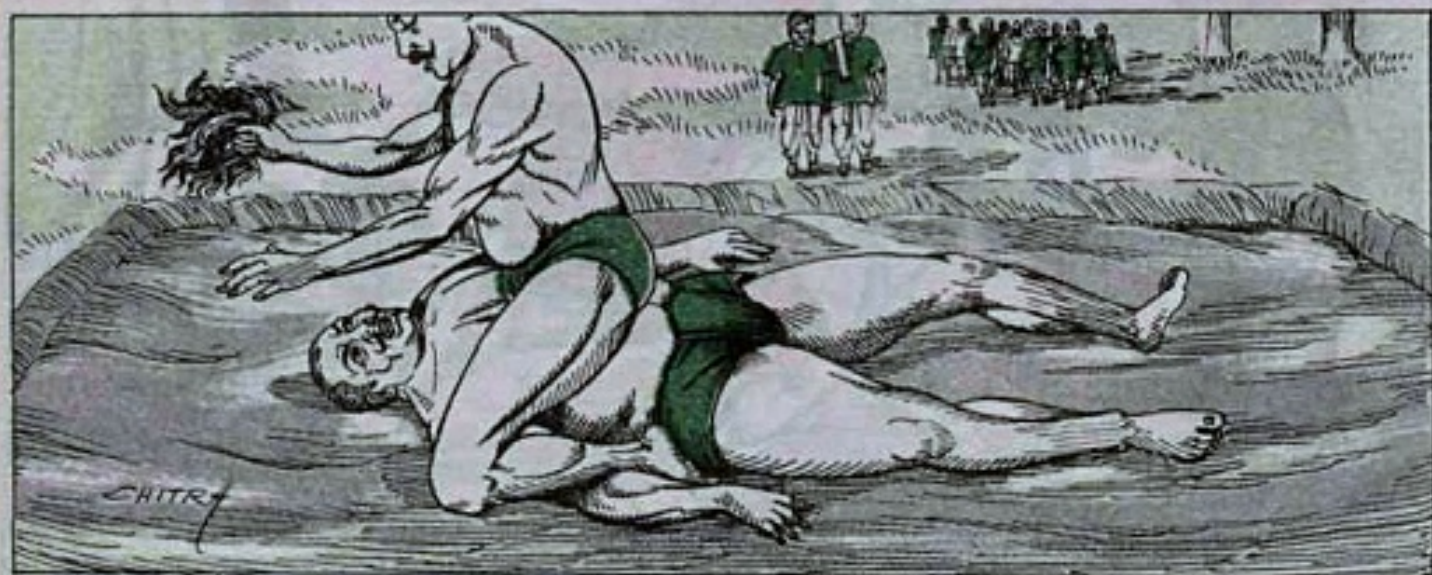
फैसला

एक बार एक न्यायाधीश के यहाँ कहीं से दो आदमी आये। वे एक हीरे की अंगूठी को लेकर आपस में झगड़ रहे थे। दोनों आदमी उस अंगूठी को अपनी-अपनी बता रहे थे।

न्यायाधीश ने दोनों की बातें सुनकर अंगूठी अपने हाथ में ली, आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा–"सच सच बताओ, यह अंगूठी तो राजा के महल से चोरों ने चुराई है! यह अंगूठी तुम लोगों को कहाँ मिली? कैसे मिली?"

यह बात सुनकर दोनों आदमी चकित हुए, पर एक ने बताया–"साहब! यह अंगूठी मेरी नहीं, इसकी है। चोरी के साथ मेरा कोई ताल्लुक़ात नहीं।" यों बचना चाहा।

दूसरे ने विनयपूर्वक बताया–"महाशय! यह मेरी है। मैंने कहीं चुराई नहीं।"

इस पर न्यायाधीश ने पहले व्यक्ति को धोखेबाज ठहराकर उसे दण्ड दिया और दूसरे को वह अंगूठी सौंपकर भेज दिया।

दहेज़ का क़िस्सा
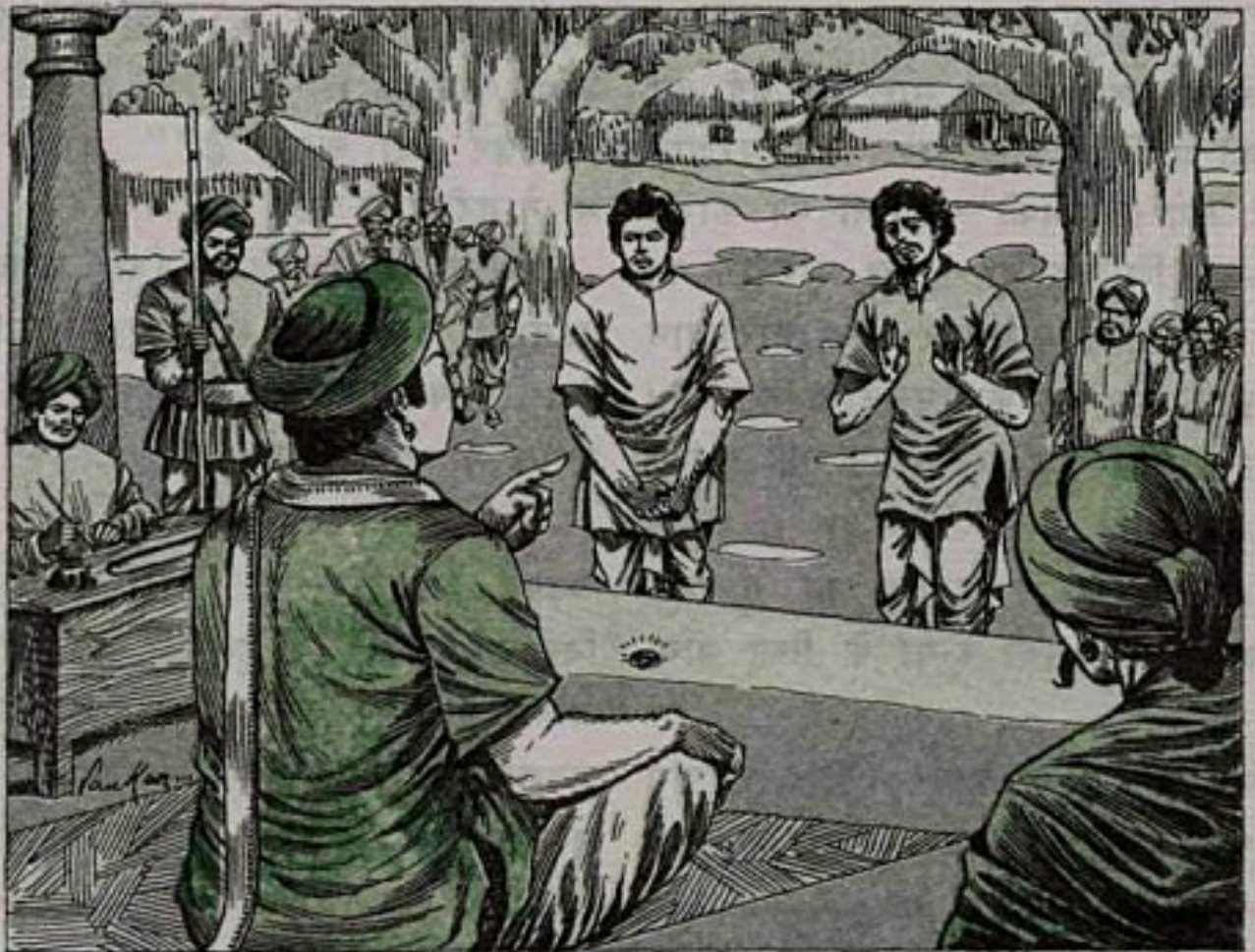
कामार्पूर नामक गाँव में रूपराम नामक एक धनी था। उसके अंजन नामक एक पुत्र और अरुणा नामक एक पुत्री थी। अंजन शहर में पढ़ता था। उसे सब लोग चाहते थे।

अरुणा जब सोलह साल की हुई, तब उसकी शादी को लेकर माता-पिता परेशान होने लगे। उनकी परेशानी का कारण था–वर शिक्षित हो, अच्छे परिवार का हो, स्वभाव से बुद्धिमान और चरित्रवान भी हो! ऐसे वर का मिलना कठिन था।

उसी गाँव में हरीन्द्र नामक एक व्यक्ति था जो शादी के रिश्ते जोड़ने में कुशल था। रूपराम ने हरीन्द्र को बुलाकर समझाया कि उसकी कन्या के लिए योग्य वर ढूंढ़े!

एक सप्ताह के अन्दर हरीन्द्र रूपराम के घर आया। उसने बताया कि पांच मील की दूरी पर स्थित रतिपुर के एक चौधरी के परिवार में अरुणा के योग्य वर है। अन्य बातों के निर्णय करने के पहले वर पक्षवाले आकर वधू को देखेंगे। आप लोग भी वर को देखकर उचित निर्णय कर ले।

"वर क्या करता है?" अरुणा की माँ ने हरीन्द्र से पूछा।

"आप का पुत्र अंजन जिस स्कूल में पढ़ता है, उसी स्कूल में वह एक अध्यापक है। उसका नाम प्रबोधकुमार है।" हरीन्द्र ने जवाब दिया।

इसके बाद प्रबोधकुमार के पिता को लड़की देखने बुलाया गया। वधू को दिखाने का निर्णय हुआ। भुवनचौधरी अरुणा को देखने रूपराम के घर आया। अरुणा को अलंकृतकर भुवनचौधरी के सम्मुख लाया गया। चौधरी ने अरुणा

से घर के काम-काज तथा रसोई के बारे में कई सवाल पूछे, अरुणा ने समुचित उत्तर भी दिये। इसके बाद अरुणा को घर के अन्दर भेजकर अन्य विषयों पर चर्चा हुई।

हरीन्द्र ने चौधरी साहब से पूछा–"महाशय, आप को लड़की पसंद आई?"

चौधरी ने कहा–"इस कन्या के साथ मेरे पुत्र का विवाह करना हो तो पहले इस बात का फ़ैसला हो जाना चाहिए कि यह कन्या अपने साथ कितना सोना और नक़द मेरे घर लायेगी? केवल कन्या को देखने मात्र से फ़ायदा ही क्या है? दहेज़ का भी तो निर्णय होना चाहिए। हमारा परिवार बहुत ही प्रतिष्ठित है। इसके अनुरूप दहेज़ भी मिलना चाहिए। ताकि हमारी प्रतिष्ठा में भंग न हो! मेरा पुत्र तो सब प्रकार से योग्य वर है! उचित दहेज़ के बिना उसका विवाह कभी नहीं हो सकता। इसलिए बताइए, आप कितनी रक़म दे सकते हैं?"

"आप अपना विचार बताइये।" रूपराम ने पूछा।

"आप तो निर्धन परिवार के नहीं हैं! मेरे पुत्र भी अयोग्य नहीं है। इसलिए सौ तोले सोने के आभूषण, दस हज़ार नक़द और अन्य उपहार आदि मिल जाने

चाहिए। इससे भी ज़्यादा देने की इच्छा प्रकट करते हुए कई रिश्ते आये, पर कहीं लड़की काली है, कहीं कोई ऐब है। इसलिए मेरी यह मांग आप पूरा कर सकें तो विवाह की तैयारियाँ कर सकते हैं।" चौधरी ने कहा।

"आप के पुत्र को क्या कन्या को देखने की आवश्यकता नहीं?" हरीन्द्र ने पूछा।

"मेरे ज़िंदा रहते उसकी शादी मेरी इच्छा के अनुसार ही होनी चाहिए।" भुवन चौधरी ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

"ज़माना बदल रहा है। अलावा इसके हम भी वर को देखना चाहेंगे।"
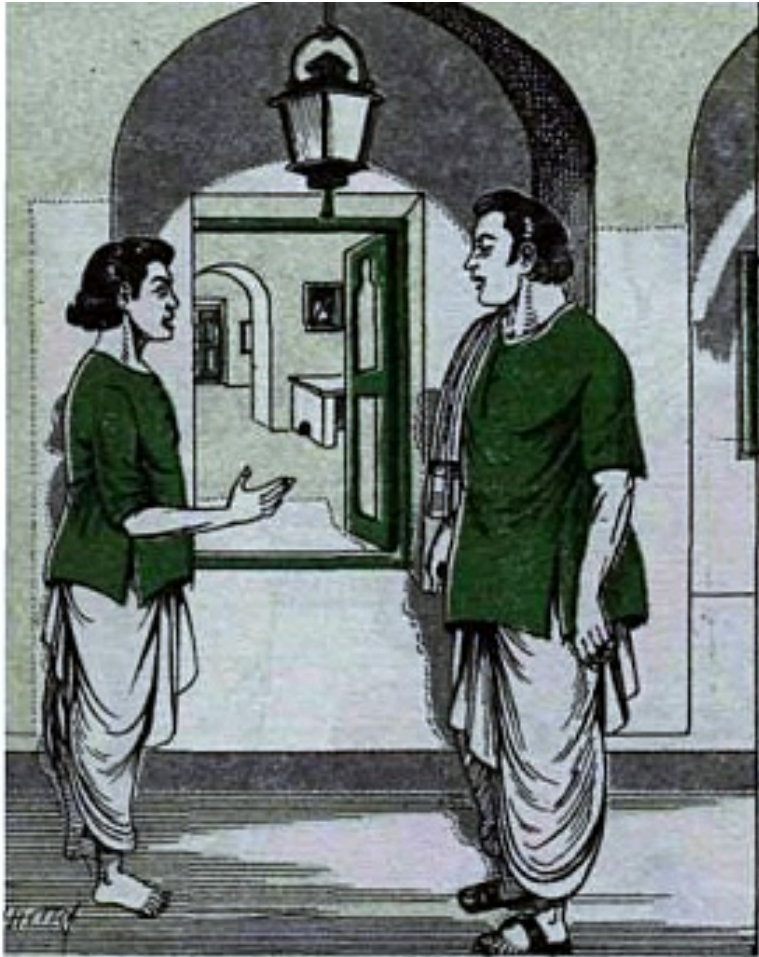
हरीन्द्र ने कहा। इस पर चौधरी ने एक दिन अपने पुत्र को कन्या को देखने भेजने की सम्मति दी।

गरमी की छुट्टियों में अंजन घर लौटा तो अपनी बहन की शादी के रिश्ते की बात सुनकर वह परमानंदित हुआ। प्रबोधकुमार के प्रति अंजन के मन में आदर की भावना थी।

इसके दो दिन बाद प्रबोधकुमार कन्या को देखने आया। वह अंजन को देख विस्मय में आ गया। अंजन ने भी प्रबोध को बताया कि वधू उसकी छोटी बहन है। अरुणा को देख प्रबोधकुमार भी संतुष्ट हुआ। यह बात उसने अंजन से बताई, तब अंजन ने कहा—"लेकिन आप के पिता हमारी शक्ति से बढ़कर दहेज़ मांग रहे हैं, क्या किया जाय?"

"मैं अपने पिता की बात जानता हूँ। लेकिन मैं क्या करूँ? वे मेरे पिता ठहरें। उन्हें दुखी बनाना मैं नहीं चाहता। सच कहूँ तो मैं दहेज़ से सख्त नफ़रत करता हूँ। मैं दहेज की प्रथा को तोड़ने की मन से कामना करता हूँ। लेकिन अपने पिता के विश्वासों के विरुद्ध आवाज़ नहीं उठा सकता। ऐसी हालत में कोई मध्यम मार्ग कैसे ढूंढ़ा जाय?" प्रबोधकुमार ने कहा।

"मेरे मन में एक उपाय सूझ रहा है। हमारे स्कूल में सोमनाथ नामक एक व्यक्ति है। वह जादू की कला में प्रवीण है। शायद वह हमारी सहायता कर सकते हैं।" अंजन ने सुझाव दिया।

"कोशिश करके देखो।" प्रबोधकुमार ने सलाह दी।

विवाह और मुहूर्त भी निश्चित हो गये। पर रूपराम चिंता के मारे परेशान था। सोने के कुछ आभूषण ज़रूर इकट्ठे किये, पर सौ तोले के बराबर न थे। नक़द भी तीन हज़ार मात्र थी। सोमनाथ ने तो ढाढ़स बंधवाया कि वह सारा मामला ठीक करेगा, लेकिन उस युवक पर सोमनाथ का पूरा विश्वास न था।

एक दिन सोमनाथ दो पीतल के पात्रों के साथ अंजन के घर आया। उन पर ढक्कन भी थे। ढक्कन हटाने पर उन पात्रों के ऊपरी भाग पर एक इंच गहरे पीतल के खाने थे। ये खाने ऐसे तैयार किये गये थे कि पात्रों पर ढक्कन बंदकर दे, तो खाने ढक्कन में कस जाते हैं। इस प्रकार प्रकट नहीं होते कि ढक्कन के भीतर खाने हैं। क्योंकि ढक्कनों की लंबाई एक इंच से अधिक थी। बर्तन लगभग एक फुट ऊँचे थे। उसके ऊपरी भाग का व्यास नौ इंच है। नीचे छे इंचे। बर्तन खूब मांझे गये थे, इस कारण चमक रहे थे।

सोमनाथ ने पहले ही अंजन और प्रबोधकुमार को समझाया था कि वह क्या करने जा रहा है, दोनों ने उसकी योजना को मान लिया।

विवाह के दिन अरुणा ने अपने सारे गहने पहन लिये, थोड़े और गहने जहाँ-तहाँ उधार लाकर पीतल के बर्तन के एक इंच गहरे खाने में रख दिये गये। सोमनाथ ने इसी प्रकार दूसरे पात्र के खाने में सौ रुपये के बण्डल रख दिये। उन खानों का रहस्य न जाननेवाले यही सोचेंगे कि एक पात्र भर में सोने के गहने और दूसरे पात्र में रुपयों के बण्डल रखे हुए हैं।

भुवनचौधरी को भी यह भ्रम हो गया था।

रूपराम ने विवाह के समय कहा— "यह संपत्ति तो वर की है, इसलिए

हमारे आचार के अनुसार उसी को सोने को तौलने व रुपयों को गिनने का अधिकार है।"

प्रबोधकुमार उन पात्रों को अपने साथ एक कमरे में ले गया, थोड़ी देर बाद लौटकर अपने पिता को बताया कि सब कुछ ठीक है।

विवाह के रस्म यथा प्रकार संपन्न हुए। बर-वधू को जब एक कमरे में भेजने का समय आया, तब भुवनचौधरी दहेज़ की रक़म वसूल करने आया।

सोमनाथ ने चौधरी को पीतल के बर्तन दिखाकर कहा–"आज की संपत्ति को आप के द्वारा सुरक्षित रखना उचित ही है। पर क्या आप यह सोना और यह धन हजम कर पायेंगे?"

"क्यों नहीं?" भुवनचौधरी ने पूछा।

"आप तो बुजुर्ग हैं; सामाजिक मर्यादा का ज्ञान रखते हैं; साथ ही आप यह भी जानते हैं कि यह दहेज़ लेने का हक़ आप को नहीं है। यह सामाजिक अपराध है। न्याय के अनुसार आप मेहनत करके जो धन कमाते हैं, उसी का उपभोग कर सकते हैं। वास्तव में यह दहेज़ कैसी कमाई है? यह दहेज़ समाज की दृष्टि में क्या है? यह मैं अभी आप को दिखा देता हूं?" इन शब्दों के साथ सोमनाथ ने दोनों पात्रों के ढक्कन खोलकर ऊपर उठाया। उनमें इस वक़्त गहने और रुपयों के बण्डल न थे। दोनों पात्रों में से दो नाग बाहर निकल आये और फुत्कारने लगे।

भुवनचौधरी सांपों को देख घबरा गया और वहाँ से जान के डर से बेतहाश भाग गया।

पात्रों में बिठाये गये खानों के नीचे सोमनाथ ने अपने पालतू सांपों के जबड़े निकालकर रख दिये थे।

इस घटना ने भुवनचौधरी को अच्छा सबक़ सिखाया। इसके बाद उसने अपने अन्य पुत्रों के विवाह के समय एक कौड़ी भी दहेज़ के रूप में न ली।

वर जब शाप बने!

एक गाँव में रामनारायण नामक एक गरीब किसान था। वह दूसरों के खेत इकरारनामे पर लेकर खेती करता और उसीसे अपने परिवार का भरण-पोषण किया करता था। उसके मन में दो अतृप्त कामनाएँ थीं—एक देशाटन करने की और दूसरी बढ़िया भोजन करने की। लेकिन उसके जैसे गरीब किसान के लिए ये कामनाएँ महँगी पड़ती थीं।

एक बार उसने सोचा कि कम से कम राजधानी में मनाये जानेवाले वसंतोत्सव को तो देखे। इस विचार के आते ही अपने मित्र केशव के साथ राजधानी की ओर चल पड़ा। दोनों ने दिन भर यात्रा की, अंधेरा होते होते वे एक जंगल में फँस गये। उस रात को आराम करने के लिए उन्हें एक जगह एक मंदिर दिखाई पड़ा। रामनारायण ने उत्साह में आकर अपने दोस्त से बताया कि आज की रात इस मंदिर में काटी जाय!

पर केशव ने इनकार करते हुए कहा—"यह तो चण्डमुखी नामक देवी का मंदिर है। यह देवी तो क्रोध-स्वभाव की है। वह दिन भर संचार करके रात को मंदिर में लौटती है। उस वक़्त अगर कोई उसे मंदिर में दिखाई दिया तो उसे शाप देगी।"

"देवी अगर मुझ पर नाराज़ हो जाती है तो होने दो, मगर मैं एक क़दम भी यहाँ से आगे बढ़ा नहीं सकता।" ये शब्द कहते रामनारायण मंदिर के भीतर चला गया। केशव आगे बढ़ा।

रामनारायण मंदिर में जाकर लेट गया। दूसरे ही क्षण उसकी आँखें लग गईं और वह सो गया। आधी रात के वक़्त उसे लगा कि कोई उस पर चाबूक मार रहा है, वह चौंककर उठ बैठा।

कु. सावित्री गर्ग

उसने देखा, सामने कोई देवी आँखें लाल पीली करते चाबूक लेकर खड़ी हुई है। देवी ने उससे पूछा–"अबे तुम कौन हो? मेरी अनुमति के बिना मेरे मंदिर में लेटने की तुम्हारी यह हिम्मत?"

रामनारायण ने देवी को प्रणाम करके निवेदन किया–"माई! मैं एक गरीब किसान हूँ? राजधानी में जाते थक गया, अंधेरा फैल गया था, इस कारण मैं यहाँ पर आराम कर रहा था। सवेरा होते ही मैं अपने रास्ते आप चला जाऊँगा।"

"तुम्हें क्षमा करने की बात लोगों पर प्रकट हो जाएगी तो सब लोग इस मंदिर को सराय बना डालेंगे। तुम्हें शाप देना ही होगा! तुम अपने को किसान बताते हो, इसलिए एक वर्ष तक तुम्हारे हाथ का जल जिस किसी भी पौधे को छुएगा, वह पौधा मर जाएगा।" ये शब्द कहकर देवी गायब हो गई।

रामनारायण यह सोचते राजधानी की ओर चल पड़ा कि वह साल भर खेती किये बिना कैसे जीयेगा?

उस वर्ष वसंतोत्सव ठाठ से मनाये गये। देश के कोने कोने से आये हुए किसानों ने राजा को अपने कष्ट कह सुनाये। सबके सामने यही जटिल समस्या थी कि एक विचित्र प्रकार की घास उगकर फ़सलों को बरबाद करती थी, उसका नाश करना मुमकिन न था। यह बात सुनकर रामनारायण ने राजा को प्रणाम किया और कहा–"महाराज! मुझे मौक़ा दिया जाय तो मैं साल भर इस अनोखी घास के पौधों को नष्ट कर सकता हूँ।"

राजा ने रामनारायण के वचनों की परीक्षा ली, इसके साबित होने पर राजा ने उसके लिए आवश्यक लोगों की मदद के साथ सारा प्रबंध किया। रामनारायण ने उस दल को साथ लेकर सभी गाँवों का भ्रमण किया और फ़सल के बोने के पूर्व अपने हाथ से सभी खेतों को पानी दिया। इस पर पहले से ही खेत में

जो भी पौधे थे, वे सब पूर्ण रूप से नष्ट हो गये।

इस प्रकार रामनारायण की दोनों कामनाओं की पूर्ति हुई। उसने एक वर्ष के अन्दर सारे देश का भ्रमण किया और सब जगह बढ़िया सत्कार पाया। राजा ने उसे सौ एकड़ ज़मीन इनाम में दे दी।

दूसरे साल भी रामनारायण वसंतोत्सव में भाग लेने राजधानी में जाते हुए चन्द्रमुखी मंदिर के पास पहुँचा तो अंधेरा हो गया। इसलिए उसने उस मंदिर में ही विश्राम किया। आधी रात के वक़्त देवी प्रत्यक्ष हो गई।

रामनारायण ने देवी को प्रणाम करके कहा–"देवीजी! आप के शाप के कारण मेरी सारी इच्छाएँ पूरी हो गईं और साथ ही देश का उपकार भी हो गया।"

चण्डमुखी क्रुद्ध हो बोली–"अरे मूर्ख! तुम मुझे फिर से उकसाने आये हो? इस साल तुम जहाँ जहाँ पैदल चलोगे, वहाँ वहाँ तुम्हारे क़द के बराबर गड्ढा बन जाएगा।" यों शाप दे देवी गायब हो गई।

रामनारायण ने भाँप लिया कि वह अब वहाँ से हिल नहीं सकता है। सवेरा होने तक वह उसी मंदिर में बैठा रहा। सवेरा होते ही उस रास्ते से चलनेवाले एक यात्री के द्वारा राजा के पास खबर भेज दी, एक पालकी मँगवाकर उसमें बैठ गया। राजा के दर्शन करके उसने अपने शाप का वृत्तांत सुनाया। उस शाप के द्वारा फ़ायदा उठाने की एक योजना राजा को बताई।
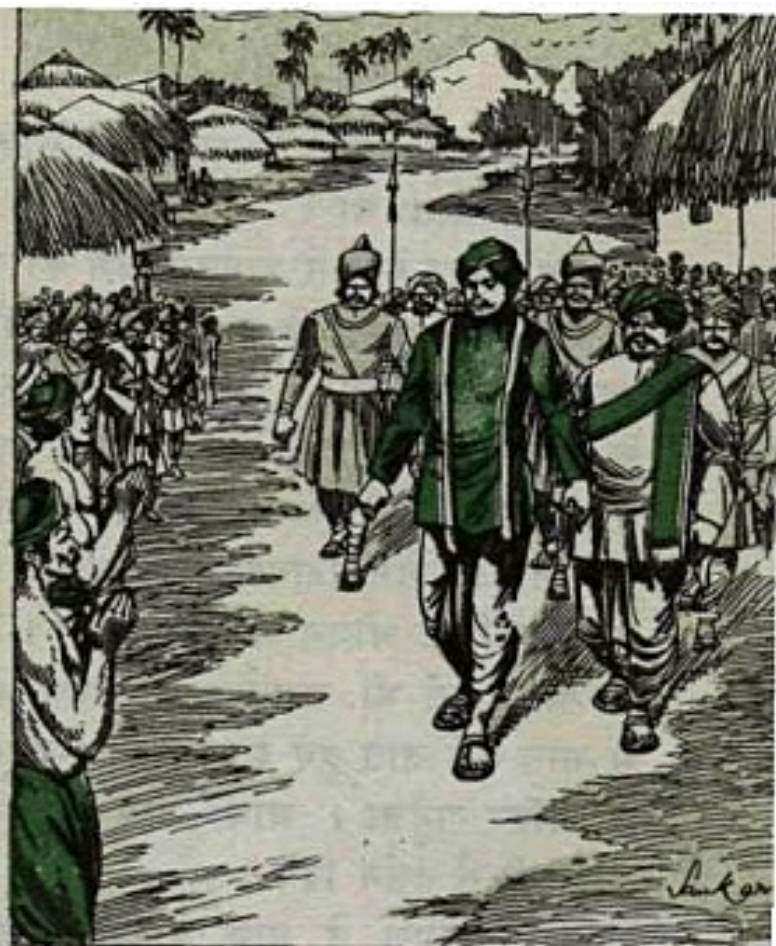
वह योजना यह थी कि राज्य भर में जो जो नहरें खुदवानी थीं, उन्हें रंगोली के साथ निशाने लगाये जाय तो रामनारायण उनसे होकर पैदल चलता जाएगा। उसके पीछे अपने आप उसकी ऊँचाई तक की गहरी नहरें बन जाएँगी।

यह योजना अमल की गई। रामनारायण को नहरों के वास्ते जब पैदल चलने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी, तब वह पालकी में यात्रा करता था। वह जहाँ भी टिक

जाता, सोने के थालों में राजोचित भोजन उसे मिल जाता था ।

इस प्रकार देवी ने रामनारायण को जो दो शाप दिये थे, उनके द्वारा देश का और ज़्यादा उपकार हुआ । बिना किसी प्रकार के श्रम के थोड़े से खर्च में देश भर में नहरें बन गईं । नई जमीन खेती के लायक़ उपजाऊ बन गई । रामनारायण को देशाटन के साथ स्वादिष्ट भोजन भी प्राप्त हुआ ।

तीसरे वर्ष भी रामनारायण वसंतोत्सव में भाग लेने जाते हुए शाम तक चण्डमुखी के मंदिर पहुँचा । आधी रात के वक़्त उसे देवी ने दर्शन दिये ।

रामनारायण ने हाथ जोड़कर कहा– "देवीजी, आप के शाप अद्भुत हैं । आप के शाप के कारण ही मुझे एक बार और देशाटन के साथ राजोचित भोजन प्राप्त हुआ, साथ ही जनता का उपकार करने का पुण्य-लाभ भी हुआ । आप शाप देना बंद कर दे तो प्रति नित्य आपकी पूजा-अर्चना का प्रबंध करूँगा ।"

इस पर चंडमुखी देवी ने क्रोध में आकर पुनः शाप दिया–"अरे मूर्ख! तुमने अब तक दो बार मेरे आदेश का तिरस्कार करके मेरे मंदिर में प्रवेश किया । मेरे शापों की अवहेलना की । मैं देखूंगी कि इस बार तुम्हारा देशाटन और परोपकार कैसे हो सकते हैं? तुम्हारी नजर में जो भी चीज आएगी, वह भस्म हो जाएगी । तुम अपनी जिंदगी भर आँखों पर पट्टी बाँधे अंधे की तरह अपने दिन काटोगे ।"

इस पर रामनारायण ने झट से अपनी पगड़ी से आँखों पर पट्टी बाँध ली । रात भर सोचता रहा । सवेरा होते ही टटोलते हुए मंदिर के बाहर आया, पट्टी खोलकर मंदिर पर अपनी दृष्टि डाली । फिर क्या था, दूसरे ही क्षण मंदिर जलकर भस्म हो गया । इसके साथ ही रामनारायण का शाप भी जाता रहा ।

इसके बाद रामनारायण ने वहाँ पर एक सराय बनवाई । वह यात्रियों के काम आने लगी ।

वीर हनुमान

२३. वानर और राक्षसों का द्वन्द्व युद्ध

लंका के अन्य द्वारों पर भी अपनी पूर्व योजना के अनुसार घेरा डाला गया। सुग्रीव ज़रूरत के वक़्त सहायता देने के लिए उत्तर और पश्चिमी द्वारों के बीच बड़ी सेना के साथ तैयार था। वानर युद्ध करने के लिए पेड़ और शिलाओं के साथ सन्नद्ध थे। सारी वानर सेना लंका को घेर रही थी जिससे त्रिकूट पर्वत ढक गया था। वानरों के कोलाहल का वर्णन करना असंभव था।

उस समय रामचन्द्रजी ने विभीषण को समझा कर अंगद को रावण के पास राजदूत के रूप में भेजने का निश्चय किया। अंगद को बुला कर रावण के पास अपना संदेशा यों भेजा।

"हे रावण! ब्रह्मा के द्वारा अनेक वर प्राप्त करने का तुम्हारा अभिमान अब चूरचूर होनेवाला है। तुमने मेरी पत्नी का अपहरण किया, इस पर क्रोध में आकर मैं यमराज की तरह तुम्हारा वध करने आया हूँ। मैं तुम्हारा वध करने के लिए लंका के द्वार पर अपनी सेना के साथ तैयार हूँ। तुम जिस बल को देख सीताजी का अपहरण कर चुके हो उस बल का अब परिचय दो। सीताजी को लाकर मुझे सौंप दो और मेरी शरण में आ जाओ, वरना मेरे कठोर बाण पृथ्वी के समस्त राक्षसों का सर्व नाश करेंगे। मेरी शरण में आये हुए धर्मात्मा विभीषण को मैं लंका का राजा नियुक्त करूँगा। तुम

साहस के साथ युद्ध करो, ऐसा न होकर यदि तुम पक्षी बन कर कहीं भागना चाहोगे तो मैं तुम्हें रोकूँगा। मैं तुम्हें एक अच्छी सलाह देता हूँ। आगे फिर से तुम लंका को देख न सकोगे, अभी अच्छी तरह से देख लो। इसी वक़्त तुम अपनी अंत्येष्ठि क्रियाएँ कर लो। तुम्हारे प्राण मेरे हाथों में हैं।"

तारा का पुत्र अंगद रामचन्द्रजी का संदेशा लेकर आकाश मार्ग में शीघ्रतापूर्वक रावण के महल में पहुँचा। अपने मंत्रियों के बीच बैठे रावण को उसने देखा। उसने रावण को अपना परिचय देकर रामचन्द्रजी का संदेशा सुनाया।

कठोर शब्दों से पूर्ण उस संदेशा को सुनने पर रावण का क्रोध भड़क उठा। उसने तीक्ष्ण स्वर में कहा–"इस दुष्ट को पकड़ कर मार डालो।" रावण का आदेश पाते ही तत्काल चार राक्षसों ने आगे बढ़ कर अंगद को बन्दी बना। उसने दूसरे ही क्षण उन राक्षसों को अपनी काँखों में दबाया और वह तेज़ी के साथ आसमान में उड़ा। रावण के महल के शिखर पर उतर कर रावण की आँखों के सामने ही राक्षसों को नीचे गिराया और रावण के महल के शिखर को तोड़ दिया। इसके बाद पुनः अपना परिचय दे अंगद सिंहनाद करके रामचन्द्रजी के पास लौट आया।

अंगद का यह कार्य रावण को अपशकुन-सा प्रतीत हुआ। वह हिम्मत हार बैठा, चारों तरफ़ नजर दौड़ाते गहरी सांस लेने लगा। वह अत्यंत भयभीत व परेशान प्रतीत हो रहा था।

वानर युद्ध करने के लिए अत्यंत ही लालायित थे। पर्वताकृतिवाला सुषेण सुग्रीव का आदेश पाकर कुछ वानरों को साथ ले लंका के चारों द्वारों पर निगरानी रखने लगा। नगर के भीतर राक्षस भी हथियारों से लैस हो कोलाहल करते चक्कर काट रहे थे।

कुछ राक्षसों ने रावण के पास जाकर बताया कि वानरों ने लंका को घेर लिया है। रावण तुरंत सिंहासन पर से उठ खड़ा हुआ। अपने महल के ऊपर जाकर लंका के चतुर्दिक फैले हुए वानरों को देखा। सारा त्रिकूट पर्वत वानरों से भरा हुआ था। रावण समझ नहीं पाया कि इतनी संख्यावाले वानरों का वध कैसे किया जाय। उसकी हिम्मत टूटने लगी। वह संदेह में पड़ गया।

रामचन्द्रजी ने भी लंका नगर की चहार दीवारी के पास जाकर देखा कि राक्षस लंका नगर की रक्षा कैसे कर रहे हैं। जब उनके मन में यह विचार आया कि इसी लंका में तो सीताजी बंदी हैं, तब उनका दुख और क्रोध भी एक साथ उमड़ पड़ा। इस पर रामचन्द्रजी ने वानरों से कहा–"तुम लोग अभी जाकर शत्रुओं का निर्दयतापूर्वक संहार करो। देरी न करो।"

प्रमुख वानर पेड़ों व शिलाओं के साथ युद्ध के लिए पहले से ही तैयार थे, रामचन्द्र का आदेश पाते ही वे लोग जहाँ-तहाँ प्राकारों पर रेंगकर चढ़ गये। द्वारों पर भी वानरों का हमला प्रारंभ हो गया।

विभीषण कवच धारण करके अपने मंत्रियों के साथ रामचन्द्रजी के समीप में तैयार खड़ा था। गज, गवय, गवाक्ष, शरभ तथा गंधमादन सर्वत्र घूमते हुए वानर सेना की रक्षा कर रहे थे।

इस हालत में रावण ने अपनी राक्षस-सेना को युद्ध-क्षेत्र में जाने का आदेश दिया। तत्काल राक्षसों ने भीषण ध्वनि के साथ कोलाहल किया। भेरियाँ बज उठीं, शंख की ध्वनि हुई। लंका के भीतर राक्षसों तथा बाहर वानरों के कोलाहल से आकाश गूंज उठा।

दोनों दलों के बीच युद्ध प्रारंभ हो गया। राक्षस गदाओं, शूलों तथा कुलहाड़ियों को लेकर वानरों पर हमला करके प्रहार करने लगे। वानर राक्षसों पर पेड़ और

साथ, नील ने निकुंभ के साथ युद्ध किया। सुग्रीव ने प्रघस के साथ, लक्ष्मण ने विरूपाक्ष के साथ लोहा लिया। इस प्रकार अनेक वानर वीरों ने राक्षस वीरों के साथ भयंकर द्वन्द्व युद्ध किया। चारों राक्षस और वानर वीर लड़ते दिखाई दे रहे थे।

द्वन्द्व युद्ध में अंगद ने मेघनाद के रथ, सारथी तथा घोड़ों का सर्वनाश किया। संपाती ने प्रजंघ का वध किया। हनुमान ने जंबुमाली को मार भगाया। नल ने प्रतापस नामक राक्षस की आँखें निकाल दीं, प्रघस तो सुग्रीव के हाथों में मारा गया।

इसके उपरांत चार राक्षसों ने एक

शिलाओं का प्रयोग करने लगे। साथ ही अपने नाखूनों तथा जबड़ों का भी प्रयोग करते उन्हें चीरने लगे। राक्षस भयभीत हो भागने लगे।

कुछ राक्षसों ने प्राकारों पर से वानरों पर हथियार फेंक दिये। वानरों ने क़िले की दीवरों पर लांघ कर राक्षसों को नीचे गिराया। देखते-देखते राक्षस और वानरों के बीच सामूहिक युद्ध शुरू हो गया।

इसके बाद द्वन्द्व युद्ध भी होने लगे। मेघनाद ने अंगद के साथ, विभीषण का एक मंत्री संपाती ने प्रजंघ के साथ और हनुमान ने जंबुमाली के साथ युद्ध किया। इसी प्रकार गज ने तपस नामक राक्षस के

साथ रामचन्द्रजी पर बाणों का प्रयोग किया। रामचन्द्रजी ने अपने बाणों का प्रयोग करके चारों राक्षसों के सिर काट दिये। मैंद ने वज्रमुष्टि नामक राक्षस को मुक्के मार-मार कर ठण्डा कर दिया। सुषेण नामक वानर वीर के हाथों में विद्युन्माली मर गया। इस द्वन्द्व युद्ध में वानरों के हाथों में अनेक राक्षस बुरी तरह से मारे गये।

इतने में सूर्यास्त हो गया। चारों ओर अंधकार फैल गया। पर युद्ध चालू था। राक्षस युद्ध-भूमि में घूमते वानरों को खाने लगे। वानरों ने सोने के आभूषण, तथा चमकनेवाले दांतों के आधार पर

राक्षसों को पहचान लिया और उन पर वार करके मार डाला। उस गहन अंधकार में ही राम और लक्ष्मण ने अपने बाणों का प्रयोग करके असंख्य राक्षसों का संहार किया।

अंगद ने जब मेघनाद के रथ, सारथी तथा घोड़ों का नाश किया, तब मेघनाद अपनी माया के द्वारा अदृश्य हो गया और रामचन्द्रजी तथा लक्ष्मण पर अपने नागास्त्रों का प्रयोग करके उन्हें बन्दी बनाया। उसने ललकार कर कहा– "जब मैं अदृश्य रहकर युद्ध करता हूं, तब साक्षात इंद्र भी मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। ऐसी हालत में आप लोग मेरे सामने किस खेत की मूली हैं? तैयार हो जाइए! अभी-अभी मैं आप लोगों के प्राण ले लेता हूं।"

रामचन्द्रजी तथा लक्ष्मण के शरीर बाणों के द्वारा ढक गये थे। इसलिए उन्हें कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। मेघनाद के बाण उनके मर्मस्थलों पर आघात करने लगे। इस पर दोनों भाई पृथ्वी पर गिर पड़े। उनके शरीरों से रक्त की धारा बहने लगी। रामचन्द्रजी की यह बुरी हालत देख लक्ष्मण जीवन से एक दम निराश हो गये। उनके मुंह पर विषाद की रेखाएं खिच गईं।

हनुमान इत्यादि प्रमुख वानर राम-लक्ष्मण को घेर कर विलाप करने लगे। वानरों ने चारों दिशाओं में मेघनाद की खोज की, पर कोई नतीजा न निकला। विभीषण ने अपनी माया के बल पर मेघनाद को देखा।

इस बीच मेघनाद राक्षसों से यों कह रहा था–"देख लिया है न तुम लोगों ने मेरे पराक्रम को? मेरी वीरता के सामने राम-लक्ष्मण बिलकुल ठहर न पाये। उन्हें मैंने अपने बाणों से बन्दी बनाया है। इन बंधनों से उन्हें कोई भी मुक्त न कर सकेगा। देखते हो न, ये दोनों मेरे हाथों में मर गये।"

में आ सकते हैं।" इन सांत्वना पूर्ण शब्दों के साथ विभीषण ने सुग्रीव के आंसू पोंछ दिये। विभीषण की बातें सुनने पर सुग्रीव के मन में फिर आशा का उदय हुआ।

लंका में लौटकर मेघनाद ने अपने पिता रावण के पास जाकर कहा–"पिताजी! मैंने राम-लक्ष्मण का वध कर डाला है।"

रावण परमानंदित हुआ। आसन से उठकर उसने अपने पुत्र का आलिंगन किया। उसने अपने पुत्र के मुंह से विस्तार पूर्वक जान लिया कि मेघनाद ने राम-लक्ष्मण का वध कैसे किया है?

इसके उपरांत रावण ने मेघनाद को भेज दिया। सीताजी का पहरा देनेवाली राक्षस नारियों को बुला भेजा। इस पर त्रिजटा आदि राक्षस नारियां रावण के सम्मुख उपस्थित हुईं। रावण ने उनसे कहा–"तुम लोग सीताजी से कह दो कि मेघनाद ने राम-लक्ष्मण का वध कर दिया है। सीताजी को पुष्पक विमान में ले जाकर मृत राम-लक्ष्मण को उन्हें दिखाओ! अब सीताजी रामचन्द्र के प्रति अपनी आशा छोड़कर अपने को खूब सजाएँगी और मेरी वशवर्तिनी हो जाएँगी। उनसे कह दो कि वह मेरे साथ शादी करने के लिए तैयार हो जायें। मैं उन्हें अपनी पट्टमहिषी बनाऊंगा।"

ये शब्द कहकर मेघनाद अपने बाणों का प्रयोग करके वानर वीरों को सताने लगा। राक्षसों ने मेघनाद की तारीफ़ की। राम-लक्ष्मण को अचेत देख मेघनाद ने सोचा कि वे दोनों मर गये हैं, तब वह बड़ी प्रसन्नता और विजय-गर्व के साथ लंका नगर में चला गया।

सुग्रीव भी राम-लक्ष्मण के शरीरों पर ढके बाणों को देख भयभीत हो गया। वह रोने लगा। इस पर विभीषण ने उसे समझाया–"सुग्रीव! डरो मत! रोओ नहीं! युद्ध तो ऐसा ही होता है! हमें सदा-सर्वदा विजय ही हाथ नहीं लगती। राम-लक्ष्मण केवल बेहोश हो गये हैं। फिर से वे होश

राक्षस नारियाँ अशोक वन में स्थित सीताजी के पास पुष्पक विमान ले गईं। सीताजी को त्रिजटा के साथ उसमें सवार कराया और मृत राम-लक्ष्मण को दिखाने ले गईं।

रावण ने उधर लंका में विजय सूचक झंडा फहराया, नगर को अलंकृत करने का आदेश जारी किया। इस बात का ढिंढोरा पिटवाया कि मेघनाद ने राम-लक्ष्मण का वध कर दिया है। इसलिए सब लोग उत्सव मनावे।

सीताजी ने राक्षसों को देखा, वे सब उत्साह में आकर कोलाहल मचा रहे थे। वानरों को दुखी देखा। साथ ही बाणों से ढके राम और लक्ष्मण को भी सीताजी ने देखा, उनका दुख फूट पड़ा।

सीताजी यह सोचकर बड़ी दुखी हुई कि रामचन्द्रजी तथा लक्ष्मण मर गये हैं। ज्योतिषियों ने इसके पूर्व सीताजी के बारे में बताया था कि सीताजी के पुत्र होंगे, वह कभी विधवा न होंगी। उनका पति अश्वमेध याग करेंगे। वह एक विशाल साम्राज्य की पट्टमहिषी बनेंगी; क्योंकि उनके चरणों में पद्मरेखाएँ हैं, वे सब अब झूठे साबित हुए।

सीताजी को सांत्वना देते हुए त्रिजटा बोली–"बहन, तुम रोओ मत! राम और लक्ष्मण मरे नहीं हैं, वे बेहोश हैं।" इसके बाद राक्षस नारियाँ सीताजी को अशोक वन में ले गईं।

थोड़ी देर बाद रामचन्द्रजी पहले होश में आये। लेकिन वे बाणों के पाशों से बन्दी थे। मृततुल्य लक्ष्मण को देख वे बहुत दुखी हुए। उन्होंने कहा–"लक्ष्मण के मर जाने पर मेरा जीवित रहना असंभव है। विभीषण को लंका का राजा बनाने का मैंने जो वचन दिया था, उसे मैं पूरा नहीं कर पा रहा हूँ। इसलिए सुग्रीव का अपनी वानर सेनाओं के साथ किष्किंधा को लौट जाना उत्तम है।" ये शब्द कहने के बाद रामचन्द्रजी को दुखी देख सभी प्रमुख वानर दुख में डूब गये।

जीर्णं मन्नम् प्रशंसंति
भार्याम् च गत यौवनाम्
शूरम् विजित संग्रामम्
गत पारम् तपस्विनम् ॥ १ ॥

[जीर्ण होने के पश्चात भोजन, यौवन की समाप्ति पर पत्नी, युद्ध में विजयी होने पर शूर तथा सिद्धि प्राप्त करने के बाद तपस्वी की प्रशंसा करते हैं ।]

काकः कृष्णः पिकः कृष्णः
को भेदः पिक काकयोः?
वसंत काले संप्राप्ते,
काकः काकः पिकः पिकः ॥ २ ॥

[कौआ काला है, कोयल भी काली है । दोनों में अंतर क्या है? वसंत काल के आगमन पर कौआ कौआ ही है, और कोयल कोयल ही, बराबरी कैसी?]

पृथ्वी व्याम् त्रीणि रत्नानि
जल मन्नम् सुभाषितम्;
मूढ़ैः पाषाण खंडेषु
रत्न संज्ञा विधीयते ॥ ३ ॥

[इस संसार में जल, अन्न और उत्तम वचन ये ही तीन सच्चे रत्न हैं । मूर्ख लोग पत्थर के टुकड़ों को देख रत्न समझते हैं ।

सच्चा मूल्य

Photo by Anant Desai
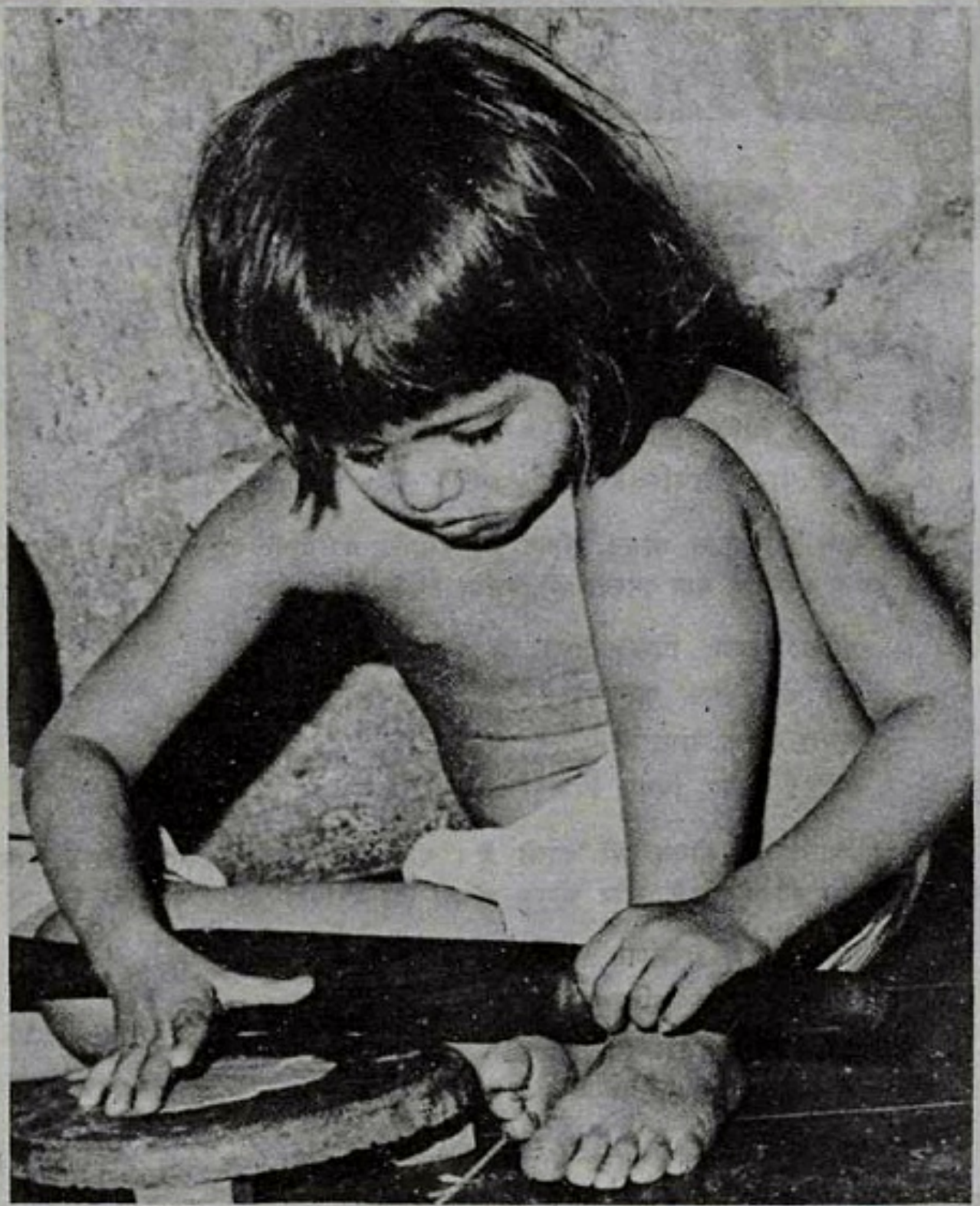
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

बनती नहीं है रोटी गोल!

प्रेषक :
विजयसिन्हा

Photo by Devidas Kasbekar

धार डिस्टीलरी
धार (म. प्र.)

मक्खन का क्या दोगे मोल !!

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

★

★ परिचयोक्तियाँ सितम्बर १० तक प्राप्त होनी चाहिए। सिर्फ़ कार्ड पर ही लिख भेजें।

★ परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ नवम्बर के अंक में प्रकाशित की जायेंगी !

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 2 & 3, Arcot Road, Madras 600 026 : Controlling Editor : NAGI REDDI

तीन विभिन्न साईजों में प्रस्तुत करते हैं

बच्चों की साइकिलें

एटलस पहले से सभी रुचियों और आवश्यकताओं के लिए सबसे अधिक मॉडल प्रस्तुत करते हैं। अब इसमें बढोत्तरी कर बच्चों के लिए १२", १४" और १६" साईजों में चमकदार और मनभावन रंगों मे तथा उचित मूल्य पर एटलस की चिर-परिचित गारंटी और क्वालिटी परम्परा से युक्त तीन नए मॉडल प्रस्तुत करते है जो वास्तव मे अद्वितीय है।

एटलस भारत में सबसे अधिक बिकने वाली साइकिल

JAISONS
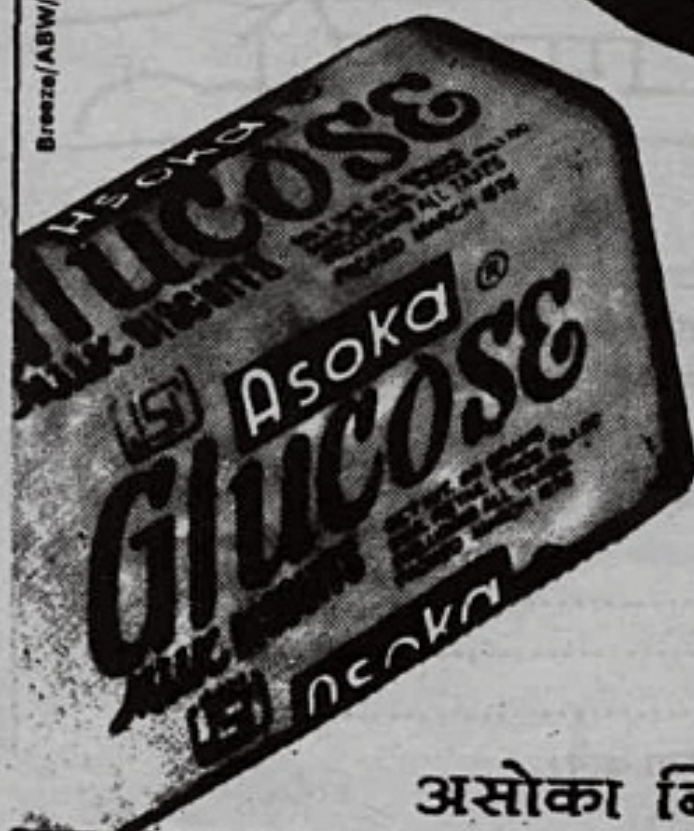
चन्दामामा-कैमल रंग प्रतियोगिता

निःशुल्क प्रवेश

इनाम जीतिए

कैमल–पहला इनाम १५ रु.
कैमल–दूसरा इनाम १० रु.
कैमल–तीसरा इनाम ५ रु.
कैमल–आश्वासन इनाम ५
कैमल–सर्टिफिकेट १०

केवल १२ वर्ष तक के विद्यार्थी प्रतियोगितामें शामील हो सकते हैं। उपर दिये गये चित्रमें अपने मनचाहें कैमल रंग भर दिजिए। अपने रंगीन प्रवेश-पत्र नीचे दिये गए पते पर भेजिए चंदामामा, 'कोरीनथिअन्' फ्लॅट नं. ५, दुसरा माला, १७, आर्थर बंदर रोड, कुलाबा, मुंबई-५. परिणाम का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा। और कोई भी पत्रव्यवहार, नहीं किया जाएगा।

नाम ....

उम्र ....

पता ....

कृपया ध्यान रखिए कि पूरा चित्र पेंट किया जाये।

चित्र भेजने की अंतिम तारीख: २०-९-१९७६

'Name and address should be written in ENGLISH'

CONTEST NO. 4

Vision

अपने मित्रों के साथ आमोद प्रमोद में भाग लीजिए

१. पक्षियों में कौआ साहसी क्यों है ।

२. सुनहरी मछली घुमक्कड़ क्यों है ?

३. जिराफ की गर्दन इतनी लम्बी क्यों है ?

४. गाय पहाड़ी पर से क्यों जाती है ?

और हर हास्यजनक उत्तर
जिस पर हंसी के फव्वारे छुटते हों
उन्हें कुछ **एम्प्रो**® ग्लुकोस बिस्कुट
पुरस्कार में दीजिए

एम्प्रो
ग्लुकोस बिस्कुटों का प्रयोग
न सिर्फ आनन्द-दायक ही है
बल्कि ये स्वास्थ्य के लिए भी
उत्तम होते हैं—जैसे कि एक
मधुर हास्य ?

एम्प्रो® ग्लुकोस बिस्कुट
ये अपने अंतिम कण तक सुस्वादु
और कुरकुरे होते हैं।

aa-afp-4676

१. क्यों कि वह कभी भी संकेत पंख दिखाता नहीं।
२. क्यों कि वह कई बार गोलाकार (घेरा) का चक्कर लगाती है। ४. क्योंकि वह पहाड़ों के नीचे से नहीं जा सकती।
३. क्योंकि उसकी गर्दन उसके शरीर से अधिक दूर है।

CHANDAMAMA (Hindi) SEPTEMBER 1976 Regd. No. M. 5452

मित्र-संप्राप्ति